● वर्ष-5

● अंक-235

रायपुर, मंगलवार
19 मई 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-3 रु.

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8› अमित शाह ने बस्तर में शहीद वीर...

रायपुर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के आज रायपुर आगमन पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने स्वामी विवेकानंद विमानतल पर पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका आत्मीय स्वागत किया।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के रायपुर आगमन पर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट पर उनका स्वागत किया और छत्तीसगढ़ समेत देशभर से नक्सलवाद के खात्मे के लिए बधाई दी।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का महापौर मीनल चौबे ने की स्वागत ।

वित्त मंत्री ओपी चौधरी एवं विधायक राजेश मूणत ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का स्वागत किया।

नक्सलवाद खत्म अब रोजगार के नए अवसर: गृहमंत्री शाह

बस्तर। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने आज छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में शहीदों के परिजनों, प्रभावित और नक्सल पीड़ितों के साथ मुलाकात व चर्चा की। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा, केन्द्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन, आसूचना ब्यूरो के निदेशक तपन डेका, नक्सलमुक्त राज्यों के पुलिस महानिदेशक सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अपने संबोधन में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि वह सीना तानकर कह सकते हैं कि भारत नक्सल मुक्त हो चुका है। यह ऐसा सपना था, जिसे साकार करने के लिए हजारों जवानों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उन्होंने कहा कि 6 दशकों तक नक्सलवाद को देश की जनता ने एक दु:स्वप्न की तरह झेला है। नक्सल प्रभावित क्षेत्र के लिए तो यह भीषण रक्तपात, विकास का अंधेरा और युवाओं के सामने अंधकारमय भविष्य था ही, परंतु जिन राज्यों में नक्सलवाद नहीं था, वहाँ के लोग भी संवेदनशीलता के साथ इस क्षेत्र की

चिंता करते थे। उन्होंने खुशी जताते हुए कहा कि तीन पीढ़ियों तक जिस नक्सलवाद को समाप्त नहीं किया जा सका, उसे हमारे वीर जवानों ने मात्र तीन वर्षों में समाप्त कर दिखाया।

अमित शाह ने कहा कि 21 जनवरी 2024, 24 अगस्त 2024 और 31 मार्च 2026 की तीन तारीखें नक्सल उन्मूलन के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिखी जाएंगी। छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार बनने के बाद नक्सलवाद पर 21 जनवरी 2024 को नक्सलवाद पर पहली बैठक हुई, 24 अगस्त 2024 को 31-03-2026 तक नक्सलवाद समाप्त करने का संकल्प, और 31 मार्च 2026 को इस संकल्प की पूर्ति - ये तीन तिथियाँ नक्सलमुक्त भारत अभियान के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होंगे। माँ दंतेश्वरी की कृपा है कि आज 31 मार्च 2026 को नक्सल मुक्त बस्तर बनाने का हमारा लक्ष्य आखिरकार पूरा हो गया। गृह मंत्री ने कहा कि सभी गांवों को जीवंत आदिवासी समुदायों में बदला जाएगा।

उन्होंने यह भी कहा कि इस देरी से हुए नुकसान की भरपाई तेजी से की जाएगी। भारत सरकार और छत्तीसगढ़ सरकार क्षेत्र के लोगों के विकास के लिए हर संभव प्रयास करेंगी। शाह ने नक्सलवादियों के इस गलत प्रचार को खारिज किया कि उन्होंने विकास न होने के कारण हथियार उठाए थे। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि क्षेत्र का विकास इसलिए नहीं हुआ क्योंकि नक्सलवादी हथियारों के साथ वहां बैठे थे। उनके आत्मसमर्पण से अब विकास की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

सरकार की गांवों तक पहुंच

शाह ने घोषणा की कि एक साल के भीतर सरकार सीधे गांवों तक पहुंचेगी। अब किसी को भी रायपुर तक जाने की आवश्यकता नहीं होगी। उन्होंने बताया कि बस्तर में वर्तमान में 196 शिविर हैं, कुल मिलाकर लगभग 200 शिविर हैं। अगले 1.5 साल में इनमें से 70 शिविरों को %सेवा गांव% में बदला जाएगा।

आदिवासी कल्याण केंद्र

इन सेवा गांव को आदिवासी कल्याण के लिए समर्पित केंद्रों के रूप में स्थापित किया जाएगा। शाह ने कहा कि वह कल एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से पूरे देश को इसकी घोषणा करेंगे। यह पहल आदिवासी समुदायों के उत्थान और सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। सरकार का लक्ष्य है कि इन केंद्रों के माध्यम से आदिवासियों को सभी आवश्यक सुविधाएं मिलें।

गृह मंत्री ने जन सुविधा केंद्रों का उद्घाटन किया, महिलाओं से की बात; चखा इमली का भी स्वाद

जगदलपुर। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह सोमवार को बस्तर जिले के नेतानार ग्राम में सीआरपीएफ कैंप पहुंचे। उन्होंने शहीद वीर गुंडाधूर सेवा डेरा नामक जन सुविधा केंद्र का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण से जुड़ी विभिन्न पहलों का अवलोकन किया।

शाह ने इमली प्रसंस्करण केंद्र में स्व सहायता समूह की महिलाओं से बातचीत की। उन्होंने जाना कि महिलाएं इमली बिक्री से अपनी आय कैसे बढ़ा रही हैं। शाह ने बस्तर की इमली का स्वाद लिया और उसकी मिठास की प्रशंसा की।

लंबी नाग ने बताया कि वे इस समूह से जुड़कर सालाना एक लाख रुपये तक आय अर्जित कर सकेंगी। गुंडाधूर महिला स्व सहायता समूह उच्च गुणवत्ता युक्त इमली पल्प तैयार कर रहा है। गृहमंत्री ने सेवा सेतु केंद्र का भी दौरा किया। यहां उन्होंने ग्राम नेतानार निवासी सुखदेवी से मुलाकात की। सुखदेवी ने बताया कि उन्होंने अपनी पांच माह की बेटी पद्मा का आधार कार्ड बनवाया है।

सेवा सेतु केंद्र की सुविधाएं

आधार सेवा केंद्र खुलने से पहले ग्रामीणों को 10 किलोमीटर पैदल चलकर नानगुर जाना पड़ता था। अब यहां नया आधार, आधार अद्यतन, पहचान सत्यापन और मोबाइल नंबर अद्यतन जैसी सुविधाएं मिलेंगी। सोनामनी ने बताया कि केंद्र खुलने से उन्हें महतारी वंदन योजना का पहचान सत्यापन कराने में आसानी हुई। ग्रामीण यहां जन्म, आय और जाति जैसे विभिन्न ऑनलाइन प्रमाण पत्र भी प्राप्त कर सकेंगे।

महिला सशक्तिकरण के प्रयास

केंद्र में महिलाओं को बैंक सखी का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे वे गांव में ही पैसे जमा करने व निकालने जैसी सुविधाएं दे सकेंगी। गृहमंत्री ने सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का भी दौरा किया, जहां महिलाओं को बुनियादी और उन्नत सिलाई सिखाई जा रही है। विजय ने बताया कि सिलाई सीखने के बाद वे अपने परिवार का बेहतर पालन पोषण कर पाएंगी। अमित शाह ने धान डेकी प्रशिक्षण केंद्र में ग्रामीण महिलाओं से चर्चा की, जिससे चावल बिक्री और पशुओं को पौष्टिक आहार मिलेगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा और मुख्य सचिव विकासशील भी उपस्थित रहे।

प्रमुख समाचार

बस्तर के विकास के लिए विशेष पैकेज कब देंगे: बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि प्रधानमंत्री पूरे देश से आह्वान कर रहे है कि वर्कफ्राम होम करे पेट्रोल-डीजल बचाये, उनके ही गृहमंत्री मुख्यमंत्री उनकी बात का माखौल उड़ा रहे, मध्य क्षेत्र परिषद की बैठक वर्चुअल क्यों नहीं किया जबकि सभी मुख्यमंत्री सचिवालय तथा गृह मंत्रालय के पास वीडियो कान्फ्रेंसिंग की सुविधा

उपलब्ध है। मध्य क्षेत्र परिषद की बैठक करने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, चार राज्यों के मुख्यमंत्री या उनके प्रतिनिधि बस्तर आयेंगे। सब अलग-अलग विशेष विमान से आयेंगे, लाखों रू. खर्च होगा, डीजल-पेट्रोल तथा विमान का ईंधन खर्च होगा। यह बैठक तो वर्चुअल हो सकती। मध्य क्षेत्र परिषद की बैठक बस्तर में बुलाना भारतीय जनता पार्टी का पॉलिटिकल प्रोपोगंडा है। केन्द्र से लेकर राज्य सरकार तक के दावा किया था, 31 मार्च के बाद नक्सलवाद समाप्त हो गया है। कांकेर में पिछले हफ्ते हमारे 4 जवान शहीद हुये, वीर गति को प्राप्त हुये।

कौशिक के साथ लूट, सरकार पर करारा तमाचा: शुक्ला

रायपुर। राजीव भवन में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि आज सुबह 8 बजे राजधानी रायपुर में बेहद चिंताजनक घटना घटी, यह घटना डरावनी है, झकझोर कर रख देने वाली है। प्रदेश के वरिष्ठ राजनेता विधायक धरमलाल कौशिक के साथ सरेआम लूट की घटना

हो गयी, जब वे अपने निवास के पास मॉर्निंग वॉक पर निकले थे, लुटेरे उनका मोबाईल छीनकर भाग गये। यह घटना जब हुई है उस समय देश के केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अमित शाह राजधानी में थे और राजधानी हाई अलर्ट पर है ऐसे समय पर घटना छत्तीसगढ़ पुलिस के गाल पर रायपुर पुलिस कमिश्नरी के गाल पर और प्रदेश के गृहमंत्री के गाल पर करारा तमाचा है। धरमलाल कौशिक छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष रह चुके है, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रह चुके है, राज्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रह चुके है, राज्य के मंत्री रह चुके है।

यह गाड़ियां पूर्ववर्ती कांग्रेस की सरकार ने खरीदा था: वर्मा

रायपुर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के द्वारा डॉयल 112 सेवा के लिए 400 वाहनों के शुभारंभ को राजनैतिक इवेंट और जनता से धोखा करार देते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि जिस अपराध के लिए भाजपा सरकार को आम जनता से माफी मांगनी चाहिए उसे ये उपलब्धि बता रहे हैं। विदित हो कि ये 400 गाड़ियां पूर्ववर्ती

कांग्रेस की सरकार के द्वारा इमरजेंसी सेवा 112 के लिए खरीदी गई थी, नए वाहनों की खरीदी के बाद विभाग को सौंपने की प्रक्रिया के दौरान ही छत्तीसगढ़ में सत्ता परिवर्तन हो गया। गाड़ियों को ढाई साल तक यार्ड में खड़ी रखना और किराए की गाड़ियों का उपयोग करना कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार में हिस्सेदारी के लिए सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग का प्रत्यक्ष प्रमाण, पूर्ववर्ती कांग्रेस की सरकार के दौरान पुलिस विभाग के अंतर्गत 112 के लिए खरीदी गई 400 नई गाड़ियां अमलेश्वर के पुलिस यार्ड में उद्घाटन के इंतज़ार में खड़ी रही, इसी तरह से 108 सेवा के लिए 375 नई एंबुलेंस प्रदेश के अलग-अलग थाना क्षेत्र और अस्पतालों में खड़ी है।

जनता को बेरोजगारी और महंगाई ही मिल रही: राउत

मुंबई। राज्यसभा सांसद संजय राउत ने देश में ईंधन की किल्लत, नीट पेपर लीक और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विदेश दौरों को लेकर केंद्र सरकार पर हमलावार है। उद्धव सेना के नेता ने सीधे प्रधानमंत्री मोदी पर कटाक्ष कर कहा कि पीएम जहां भी जाते हैं, वहां का सर्वोच्च सम्मान प्राप्त कर अवॉर्ड लेने की सेंचुरी पूरी कर रहे हैं। नीदरलैंड या

नॉर्वे जैसे किसी भी देश में उन्हें सम्मान मिल जाता है। लेकिन देशवासियों को क्या मिल रहा है? राउत के अनुसार, जनता को बेरोजगारी, बढ़ती महंगाई और बदहाल कानून-व्यवस्था का अवॉर्ड मिल रहा है। भाजपा पर तंज कसते हुए शिवसेना यूबीटी के नेता राउत ने पूछा कि इन सम्मानों का आखिर जनता के लिए क्या औचित्य है। उन्होंने कहा कि एक ओर प्रधानमंत्री मोदी जगत भ्रमण कर रहे हैं और कई देशों की यात्रा पर निकले हैं, वहीं दूसरी तरफ जनता से घर से बैठकर काम करने को कहा जा रहा है। राउत ने सवाल किया कि आखिर प्रधानमंत्री मोदी कितनी बार जगत भ्रमण करना चाहते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- जमानत नियम है, जेल अपवाद

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने यूएपीए (गैर-कानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम) के मामलों में जमानत को लेकर महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए कहा है कि जमानत नियम है और जेल अपवाद।अदालत ने 2020 के दिल्ली दंगों से जुड़े मामलों में आरोपी उमर खालिद और शरजील इमाम को जमानत न दिए जाने पर भी अप्रत्यक्ष

रूप से सवाल उठाए हैं। जस्टिस बी.वी. नागरत्ना की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि यूएपीए जैसे कठोर कानूनों के मामलों में भी आरोपी के त्वरित सुनवाई के अधिकार को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अदालत ने यह भी कहा कि लंबी अवधि तक मुकदमे का लंबित रहना जमानत देने का आधार बन सकता है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट एक ऐसे मामले की सुनवाई कर रहा था, जिसमें आरोपी पर जम्मू-कश्मीर में कथित तौर पर नशीले पदार्थों की तस्करी और आतंकवाद को फंडिंग करने वाले सीमा-पार सिंडिकेट से जुड़े होने का आरोप है।

छत्तीसगढ़ की अमूल्य धरोहर

'अवलोकितेश्वर' कांस्य प्रतिमा फिर सजेगी प्रदेश के संग्रहालय में

रायपुर। विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी एक बड़ी और गौरवपूर्ण खबर सामने आई है। रायपुर स्थित महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय से चोरी हुई भगवान अवलोकितेश्वर की दुर्लभ कांस्य प्रतिमा छत्तीसगढ़ लौटने की तैयारी में है। लगभग 19 करोड़ रुपये मूल्य की यह ऐतिहासिक प्रतिमा अमेरिका से भारत लाई जा रही है और राज्य सरकार इसे फिर से रायपुर स्थित संग्रहालय में स्थापित करने की दिशा में सक्रिय पहल कर रही है।

पर्यटन, संस्कृति एवं धर्मस्व मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को पत्र लिखकर प्रतिमा को छत्तीसगढ़ वापस भेजने का आग्रह किया है। जानकारी के अनुसार प्रतिमा अभी भारत नहीं पहुंची है, लेकिन उसके भारत आगमन के बाद राज्य शासन उसे रायपुर लाने और पुनर्स्थापित करने की प्रक्रिया को शीघ्र आगे बढ़ाएगा। संस्कृति मंत्री श्री अग्रवाल प्रतिमा की रिसीविंग के लिए दिल्ली जाने की तैयारी में हैं। बताया जा रहा है कि अमेरिका ने हाल के वर्षों में भारत को करीब 1.4 करोड़ डॉलर मूल्य की 657 प्राचीन और ऐतिहासिक कलाकृतियां लौटाई हैं। इन्हीं बहुमूल्य धरोहरों में महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय से चोरी हुई 'अवलोकितेश्वर' की यह दुर्लभ कांस्य प्रतिमा भी शामिल है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक विरासत संरक्षण और चोरी हुई भारतीय धरोहरों की वापसी की दिशा में इसे एक बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है।

यह प्रतिमा वर्ष 1939 में महासमुंद जिले के विश्वविख्यात पुरातात्विक स्थल सिरपुर स्थित लक्ष्मण मंदिर परिसर के पास मिली थी। यह उस क्षेत्र में प्राप्त कांस्य प्रतिमाओं के एक बड़े भंडार का हिस्सा थी। बाद में इसे सुरक्षित संरक्षण के लिए रायपुर स्थित महंत घासीदास

स्मारक संग्रहालय में रखा गया था, लेकिन प्रतिमा चोरी हो गई और बाद में यह प्रतिमा अमेरिका पहुंच गई।इतिहासकारों के अनुसार प्रतिमा पर अंकित शिलालेख में 'द्रौणग्रिदत्त' नाम का उल्लेख मिलता है, जो प्राचीन श्रीपुर, वर्तमान सिरपुर, का निवासी था। इससे इस प्रतिमा का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व और अधिक बढ़ जाता है।अवलोकितेश्वर की यह कांस्य प्रतिमा छत्तीसगढ़ की समृद्ध बौद्ध परंपरा, प्राचीन शिल्पकला और सांस्कृतिक पहचान की जीवंत प्रतीक है। सिरपुर, जो प्राचीन काल में बौद्ध संस्कृति, स्थापत्य और कला का प्रमुख केंद्र रहा है, वहां से प्राप्त यह प्रतिमा प्रदेश की ऐतिहासिक समृद्धि का महत्वपूर्ण प्रमाण मानी जाती है।

राज्य सरकार ने शुरू की औपचारिक पहल: संस्कृति मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने अपने पत्र में उल्लेख किया है कि यह प्रतिमा केवल छत्तीसगढ़ ही नहीं, बल्कि पूरे भारत की ऐतिहासिक और बौद्ध विरासत की अमूल्य धरोहर है। उन्होंने केंद्र सरकार से आग्रह किया है कि संस्कृति मंत्रालय एवं संबंधित एजेंसियों के माध्यम से सभी प्रशासनिक और औपचारिक प्रक्रियाएं शीघ्र पूरी कर प्रतिमा को छत्तीसगढ़ शासन को सौंपा जाए।

ताकि इसे महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय में सुरक्षित रूप से संरक्षित कर आमजन, शोधार्थियों और इतिहास प्रेमियों के अवलोकन हेतु उपलब्ध कराया जा सके। उन्होंने कहा कि विदेश पहुंच चुकी यह ऐतिहासिक धरोहर अब पुन: भारत लौट रही है, जो सांस्कृतिक विरासत संरक्षण की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। राज्य शासन प्रतिमा के संरक्षण, सुरक्षा और प्रदर्शन हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करेगा, ताकि यह अमूल्य धरोहर अपने मूल स्थान और पहचान के अनुरूप सम्मान प्राप्त कर सके।

अवलोकितेश्वर प्रतिमा की वापसी प्रदेश की खोई हुई सांस्कृतिक विरासत को पुन: स्थापित करने और सिरपुर की ऐतिहासिक पहचान को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई प्रतिष्ठा दिलाने में मील का पत्थर साबित होगी।

माओवाद के साये से निकलकर विकास की रौशनी से जगमगाया कोलेंग वनांचल

बस्तर। बस्तर का वह सुदूर वनांचल, जहाँ कभी सन्नाटा और दहशत का पहरा हुआ करता था, आज खुशहाली की एक नई इबारत लिख रहा है। बस्तर जिले के दरभा विकासखंड का कोलेंग क्षेत्र, जो दशकों तक माओवादी गतिविधियों के कारण विकास की दौड़ में पिछड़ गया था, अब अपनी एक नई और सकारात्मक पहचान गढ़ रहा है।

कभी मूलभूत सुविधाओं के लिए तरसता यह इलाका अब सड़क, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं से लैस होकर विकास की मुख्यधारा में मजबूती से कदम रख चुका है। जो ग्रामीण कभी बुनियादी सुविधाओं और शासकीय योजनाओं से पूरी तरह महरूम थे, वे अब सीधे शासन-प्रशासन के संपर्क में हैं और विकास में अपनी सक्रिय सहभागिता निभा रहे हैं।

बस्तर में बदलाव की नई बयार

एक समय था जब बारिश के दिनों में कोलेंग और उसके आसपास के गाँव पूरी तरह टापू बन जाते थे और ग्रामीणों को आवागमन के लिए भारी मशक्कत करनी पड़ती थी, लेकिन आज यहाँ की स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। जगदलपुर से लेकर कोलेंग, चांदामेटा, छिंदगुर, काचीरास, सरगीपाल और कान्दानार जैसे दुर्गम गांवों तक बारहमासी पक्की सड़कों का जाल बिछ जाने से न केवल आवाजाही सुगम हुई है, बल्कि स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी आपातकालीन सेवाएं भी अब ग्रामीणों की चौखट तक पहुँच चुकी हैं।

कोलेंग के सरपंच श्री लालूराम नाग इस बदलाव को ऐतिहासिक मानते हुए कहते हैं कि पहले यह क्षेत्र बाहरी दुनिया से पूरी तरह कटा हुआ था, लेकिन मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में माओवाद की समस्या कम होने और शासन की सक्रियता से ग्रामीणों के जीवन स्तर में एक क्रांतिकारी सुधार आया है। सड़क और संचार सुविधाओं के इस अभूतपूर्व विस्तार ने छिंदगुर जैसे गांवों को सीधे जिला मुख्यालय से जोड़ दिया है, जिसे सरपंच श्री सुकमन नाग सरकार की अंतिम छोर तक विकास पहुंचाने की प्रतिबद्धता का परिणाम बताते हैं। कनेक्टिविटी बेहतर होने का सबसे बड़ा और सीधा लाभ ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति पर पड़ा है, क्योंकि अब वे अपनी वनोपज और कृषि उत्पादों को बिना किसी बाधा के सीधे मंडियों तक ले जा पा रहे हैं। इससे न केवल उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी सृजित हुए हैं। कभी उपेक्षा का शिकार रहा यह वनांचल क्षेत्र आज अपनी पुरानी पहचान को पीछे छोड़ते हुए विकास की रौशनी से जगमगा रहा है और पूरे बस्तर में खुशहाली की एक नई उम्मीद जगा रहा है।

नक्सल मुक्त होने से अबूझमाड़ के कारकाबेड़ा में खुला स्कूल

नारायणपुर। जिले का अबूझमाड़ क्षेत्र नक्सल मुक्त होने से अबूझमाड़ के अति दूरस्थ क्षेत्र कोड़ेनार में आयोजित जनसमस्या निवारण शिविर का सकारात्मक परिणाम सामने आया है।

शिविर के दौरान ग्राम कारकाबेड़ा के ग्रामीणों ने गांव में स्कूल खोलने की मांग करते हुए आवेदन प्रस्तुत किया था। इस पर कलेक्टर नम्रता जैन ने तत्परता दिखाते हुए जिला शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार पटेल को तत्काल स्कूल खोलने के निर्देश दिए। कलेक्टर के निर्देश और जिला शिक्षा अधिकारी के मार्गदर्शन में सबसे पहले संकुल समन्वयक एवं शिक्षकों की टीम द्वारा ग्राम कारकाबेड़ा का सर्वे कराया गया। सर्वे के दौरान गांव में 20 बच्चे पढ़ाई के योग्य पाए गए। इसके बाद कलेक्टर के पुनः निर्देश पर खंड शिक्षा अधिकारी संतुराम नूरेटी, खंड स्रोत समन्वयक लक्ष्मीकांत सिंह, संकुल समन्वयक कारूराम नूरेटी, सरपंच रामूराम वड्डे तथा शिक्षकों की टीम ने अति दूरस्थ कारकाबेड़ा पहुंचकर नवीन प्राथमिक शाला का शुभारंभ किया। स्कूल प्रारंभ होने के साथ ही बच्चों को निःशुल्क गणवेश, पाठ्यपुस्तक, स्लेट, पेंसिल, श्यामपट्ट सहित अन्य शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराई गई। स्कूल खुलने से बच्चों और ग्रामीणों में काफी उत्साह देखने को मिला।

वर्तमान में इस स्कूल में गांव के 20 बच्चों को शिक्षा दी जाएगी, जिसके लिए जिला प्रशासन द्वारा एक अतिथि शिक्षक की भी व्यवस्था की गई है। भविष्य में आस-पास के गांवों जैसे मरकूड़ के बच्चे भी इस स्कूल का लाभ उठा सकेंगे। आजादी के बाद पहली बार ग्राम कारकाबेड़ा में स्कूल की शुरुआत हुई है। जिला प्रशासन की यह पहल निश्चित रूप से क्षेत्र में शिक्षा के विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण और मील का पत्थर साबित होगी।

अवैध कटाई करने वाले ठेकेदार पर 20 लाख की क्षतिपूर्ति का जारी किया नोटिस

बीजापुर। जिले के वन मण्डल बीजापुर सामान्य के तहत आने वाले वन परिक्षेत्र बीजापुर, गंगालूर, भैरमगढ़, आवापल्ली एवं पामेड़ में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत चल रहे सड़क निर्माण कार्यों में बड़े पैमाने पर वन नियमों के उल्लंघन करते हुए वन विभाग द्वारा बिना अनुमति 280 खड़े वृक्षों की कटाई एवं अवैध उत्खनन पर कड़ी कार्यवाही करते हुए वन विभाग ने संबंधित ठेकेदारों के विरुद्ध कुल 20,06,755 रुपये की क्षतिपूर्ति राशि वसूली हेतु नोटिस जारी किए गए हैं।

बीजापुर सामान्य वन मंडल से मिली जानकारी के अनुसार मनकेली-गोरना, बीजापुर-सरपंचपारा मनकेली, चेरपाल-नेन्द्रा, काकेकोरमा-मुनगा, पीडिया-मिरघानघोटूल, अकेली-कोटवारपारा, बैल-मयुरिपारा, बीरगुड़ा-बड़े संकनपल्ली, सारकेगुड़ा-बड़े पेगड़ापल्ली, एल-022-तिम्मापुर, पामेड़-रासपल्ली, एल-069/032-मंगलतोर एवं रासपल्ली (एर्रापल्ली)-पेदाचंदा सहित कुल 13 निर्माणाधीन मार्गों में बिना वन विभागीय अनुमति के कार्य किया जा रहा था। जांच में पाया गया कि सड़क निर्माण के दौरान कुल 280 खड़े वृक्षों को जमीन सतह से उखाड़कर गिरा दिया गया तथा कई स्थानों पर अवैध खुदाई कर लगभग 8755 घनमीटर मुरूम का उपयोग सड़क निर्माण में किया गया।

मामले को गंभीरता से लेते हुए वन विभाग ने संबंधित ठेकेदारों के विरुद्ध वन अपराध के कुल 18 प्रकरण पंजीबद्ध किए हैं। साथ ही नियमानुसार कार्यवाही करते हुए कुल 20,06,755 रुपये की क्षतिपूर्ति राशि वसूली हेतु नोटिस जारी किए गए हैं। वन विभाग द्वारा प्रधानमंत्री ग्राम सड़क विकास एजेंसी, जिला बीजापुर के कार्यपालन अभियंता एवं उप अभियंता को भी पत्र प्रेषित कर भविष्य में बिना अनुमति किसी भी प्रकार का कार्य नही करने के निर्देश दिए गए हैं।

उपनिदेशक पर अतिक्रमणकारियों ने किया हमला

गरियाबंद। गरियाबंद से एक बड़ी खबर सामने आ रही है, जहां अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई करने पहुंचे उपनिदेशक और उनकी टीम पर अतिक्रमणकारियों ने हमला कर दिया है। डिप्टी डायरेक्टर वरुण जैन के साथ भी धक्का-मुक्की की गई है। घटना के बाद मौके पर भारी पुलिसबल तैनात किया गया है। घटना उदंती अभ्यारण के कोर जोन अंतर्गत सीतानदी रेंज के जैतपुरी गांव की बताई जा रही है।

जानकारी के मुताबिक, अभ्यारण्य प्रशासन ने पिछले दिनों कोर क्षेत्र में अतिक्रमण के मामलों को लेकर 166

अतिक्रमणकारियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू की थी। सभी के विरुद्ध वन अपराध का मामला दर्ज कर नोटिस तमिल किया गया था। कुछ ने जवाब दिया था पर बयान दर्ज नहीं हुआ था। मामले में दो नोटिस के बाद आरोपियों ने अग्रिम जमानत याचिका लगाया था, जो खारिज हो गया। 5 आरोपियों को गिरफ्तार करने के बाद तनाव की स्थिति निर्मित हुई। सोमवार को टीम उसके बयान दर्ज करने जैतपुरी गांव पहुंची थी। इस दौरान ग्रामीणों और वन विभाग की टीम के बीच विवाद की स्थिति बन गई।

आरोप है कि कार्रवाई का विरोध करते हुए कुछ लोगों ने डिप्टी डायरेक्टर और वन कर्मचारियों के साथ धक्का-मुक्की की। हालांकि तनावपूर्ण माहौल के बीच वन अमले ने स्थिति को संभाला। घटना के बाद वन प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था के लिए पुलिस से मदद मांगी है। मामले को लेकर आगे की कार्रवाई की जा रही है। वरुण जैन ने कहा कि स्थिति को कंट्रोल में ले लिया गया है।

कबीरधाम थाने में रिल्स बनाने वाले युवक को मिला सबक

कबीरधाम। थाना परिसर का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करना एक युवक को महंगा पड़ा। कोतवाली पुलिस ने युवक की पहचान कर उसे थाने बुलाया। पूछताछ के बाद युवक ने अपनी गलती स्वीकार की। युवक आयान खान ने कोतवाली थाना परिसर का वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट किया था।

वीडियो पुलिस के संज्ञान में आते ही अधिकारियों ने इसे गंभीरता से लिया। उन्होंने तत्काल युवक को थाने बुलाया। पूछताछ के दौरान आयान खान ने बताया कि उसने बिना किसी गलत मंशा के वीडियो बनाया था। हालांकि, बाद में उसे एहसास हुआ कि थाना परिसर का वीडियो सार्वजनिक करना गलत था। उसने लिखित रूप से माफी मांगी। आयान खान ने भविष्य में ऐसी गलती दोबारा न करने का भरोसा भी दिलाया। इसके बाद पुलिस ने उसे समझाइश देकर छोड़ दिया। थाने पहुंच युवक ने मांगी माफी आयान खान ने पुलिस के सामने अपनी गलती मानी। उसने बताया कि वीडियो बनाने के पीछे उसकी कोई गलत मंशा नहीं थी।

वृंदावन ग्रीन फार्म में मालिक सहित 8 जुआरी गिरफ्तार

बिलासपुर। ग्राम गतोरी स्थित वृंदावन ग्रीन फार्म हाउस में चल रहे हाईप्रोफाइल जुआ का भाड़ाफोड़ करते हुए सीएसपी सिविल लाइन और एसडीओपी कोटा व कोनी थाना के संयुक्त नेतृत्व में दबिश देकर फार्म हाउस के मालिक मनीष शर्मा सहित 8 जुआरियों को रंगे हाथों जुआ खेलते हुए धरदबोचा।

मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर सीएसपी सिविल लाइन और एसडीओपी कोटा ने तुरंत एक विशेष टीम का गठन किया और गतोरी के वृंदावन ग्रीन फ़ार्म हाउस को चारों तरफ से

घेरकर अचानक दबिश दिया और वहां से आठ जुआरियों को गिरफ्तार कर लिया। जुआरी इधर - उधर भागने का प्रयास किया लेकिन पुलिस की घेराबंदी के कारण कोई भी भागने में कामयाब नहीं हो सके।

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से तीन लाख अस्सी हजार रुपये नगद, 11 नग मोबाइल फोन, 5 लग्जरी गाडियां सहित कुल जुमला चालिस लाख रुपये रुये को जप्त किया। गिरफ्तार आरोपी- मनीष शर्मा नीरज शर्मा रोशन सिंह मुन्ना गोयल, निवासी- राजीव गांधी चौक, थाना सिविल लाइंस, विकास सिंह, निवासी- दीनदयाल कॉलोनी, मंगला, दीपक अग्रवाल (उम्र 37 साल), निवासी- रामा लाइफ सिटी, सकरी चंद्रकिशन अग्रवाल, निवासी- तखतपुर, बिलासपुर मयंक सोनकर (उम्र 20 साल), निवासी- नया बस स्टैंड, तिफरा इन आरोपियों को जेल भेजा गया है।

कोरबा में महंगाई पर कांग्रेस का हल्ला बोल

कोरबा। पेट्रोल-डीजल की लगातार बढ़ती कीमतों और ईंधन संकट के विरोध में आज कांग्रेस ने रामपुर विधानसभा क्षेत्र में जोरदार प्रदर्शन किया। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी और जिला कांग्रेस कमेटी कोरबा (ग्रामीण) के निर्देश पर यह धरना दिया गया। ग्राम कोटमेर स्थित पेट्रोल पंप के सामने केंद्र व राज्य सरकार पर तीखा हमला बोला गया। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि सरकार की जनविरोधी नीतियों ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है। दोपहर 12 बजे से शुरू हुए धरने में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल हुए। कार्यकर्ताओं ने हाथों में तख्तियां और बैनर लेकर पेट्रोल-डीजल के दाम कम करने की मांग की। उन्होंने ईंधन की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने की भी मांग की। महंगाई पर रोक लगाओ, जनता को राहत दो जैसे नारों से धरना स्थल गूंज उठा। वक्ताओं ने बताया कि पंपों पर ईंधन संकट गहरा रहा है। दूसरी ओर, रोजाना दाम बढ़ाकर जनता की जेब काटी जा रही है। महंगाई की सबसे ज्यादा मार किसान, मजदूर, छोटे व्यापारी और आम लोगों पर पड़ रही है। डीजल महंगा होने से खेती की लागत बढ़ गई है। माल भाड़ा बढ़ने से सब्जी, अनाज समेत हर चीज के दाम आसमान छू रहे हैं। ऑटो, टैक्सी और बस संचालक भी इस महंगाई से परेशान हैं। इसके बावजूद सरकार केवल वादों और प्रचार में व्यस्त है। जमीन पर कोई राहत नजर नहीं आ रही है। रामपुर विधायक फूलसिंह राठिया ने कहा कि जनता अब सब समझ चुकी है।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

अवैध रेत खनन करते 9 हाईवा और चैन माउंटेन मशीन जब्त

एमसीबी। जिले में अवैध रेत खनन के खिलाफ प्रशासन ने सख्त बड़ी कार्रवाई की है। जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों से लगातार मिल रही शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर के निर्देश पर जिला प्रशासन ने ग्राम पंचायत घटई, तहसील भरतपुर स्थित केवई नदी क्षेत्र में संयुक्त छापामार अभियान चलाकर अवैध खनन गतिविधियों पर बड़ा प्रहार किया। जिला स्तरीय टास्क फोर्स, खनिज विभाग, राजस्व विभाग एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीम द्वारा की। इस कार्रवाई में अवैध रेत उत्खनन में प्रयुक्त एक चैन माउंटेन मशीन तथा रेत परिवहन में लगे 9 हाईवा वाहनों को मौके से जब्त किया। प्रशासनिक जांच में पाया कि संबंधित स्थल पर खनन कार्य निर्धारित नियमों एवं वैधानिक प्रावधानों के विपरीत संचालित किया जा रहा था। प्रशासन की इस सुनियोजित कार्रवाई के बाद अवैध रेत कारोबार से जुड़े लोगों में हड़कंप की स्थिति बन गई। बताया गया कि जब्त किए गए सभी वाहन एवं मशीनरी को अग्रिम वैधानिक कार्रवाई तक ग्राम पंचायत घटई की सुपुर्दगी में सुरक्षित रखा गया है।

मितव्ययिता और वित्तीय अनुशासन पर राज्य शासन सख्त

एमसीबी। राज्य शासन ने वित्तीय संसाधनों के कुशल प्रबंधन, सार्वजनिक व्यय में नियंत्रण तथा प्रशासनिक कार्यप्रणाली को अधिक जिम्मेदार, डिजिटल और संसाधन-संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से शासकीय व्यय में मितव्ययिता एवं वित्तीय अनुशासन संबंधी महत्वपूर्ण निर्देश तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है। इन निर्देशों का उद्देश्य सरकारी खर्चों में अनावश्यक व्यय पर नियंत्रण, ऊर्जा संरक्षण, ईंधन बचत और डिजिटल कार्यसंस्कृति को बढ़ावा देना है। राज्य शासन द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार 30 सितंबर तक सभी विभागों, निगमों, मंडलों, आयोगों एवं शासकीय संस्थाओं को इन नियमों का कड़ाई से पालन करना अनिवार्य होगा। माननीय मुख्यमंत्री, विष्णु देव साय मंत्रीगण तथा निगम, मंडल एवं आयोगों के पदाधिकारियों के कारकेड में केवल अत्यावश्यक वाहनों का उपयोग किया जाएगा। शासन ने स्पष्ट किया है कि सरकारी संसाधनों का उपयोग केवल आवश्यकता आधारित हो तथा अनावश्यक वाहन उपयोग पर रोक लगाई जाए।

सरकारी कार्यक्रम में सरपंच पर चाकू से हमला

डोंगरगढ़। छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ ब्लॉक के ग्राम पलांदूर में आयोजित सुशासन तिहार कार्यक्रम उस वक्त तनाव और अफरा-तफरी में बदल गया, जब मंचीय कार्यक्रम के दौरान अचानक चाकू से हमला हो गया। घटना में सरपंच मानिकलाल वर्मा के हाथ में चोट आई है। चाकूबाजी की घटना से मौके पर अफरा-तफरी मच गई। जानकारी के मुताबिक कार्यक्रम में भाषण चल रहा था, तभी आरोपी जितेन्द्र यादव (36 वर्ष) निवासी पलांदूर ने अचानक हमला कर दिया। घटना के तुरंत बाद ग्रामीणों और मौजूद लोगों ने आरोपी को पकड़ लिया, जिसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। यह घटना ऐसे समय हुई है जब प्रदेशभर में सुशासन तिहार 2026 के तहत सरकार गांव-गांव समाधान शिविर आयोजित कर जनता की समस्याओं के निराकरण का दावा कर रही है। सरकारी रिकॉर्ड और जनसंपर्क विभाग के अनुसार इन शिविरों में प्रशासन सीधे ग्रामीणों से संवाद कर रहा है। हालांकि डोंगरगढ़ क्षेत्र में सुशासन तिहार के दौरान विवाद और विरोध की यह पहली घटना नहीं है।

धमतरी में 108 टीम की तत्परता से सुरक्षित प्रसव

धमतरी। महुआबहारा गांव, ब्लॉक नगरी निवासी 29 वर्षीय खिलेश्वरी नेताम को प्रसव पीड़ा होने पर सिविल अस्पताल नगरी में भर्ती कराया गया था. महिला की स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने बेहतर उपचार के लिए उन्हें जिला अस्पताल धमतरी रेफर किया। इसके बाद 108 संजीवनी एक्सप्रेस के माध्यम से महिला को धमतरी ले जाया जा रहा था। इसी दौरान रास्ते में अचानक महिला की प्रसव पीड़ा तेज हो गई। परिस्थिति को गंभीर होता देख एंबुलेंस स्टाफ ने पूरी तत्परता और समझदारी के साथ स्थिति को संभाला। 108 एंबुलेंस के कर्मचारियों तोयेंद्र वर्मा और कुलदीप सिंह ने ईआरसीपी डॉक्टर से लगातार संपर्क बनाकर जरूरी मार्गदर्शन लिया और एंबुलेंस को सुरक्षित स्थान पर रोककर महिला का सुरक्षित प्रसव कराया। कुछ ही देर में एंबुलेंस के भीतर नवजात की किलकारी गूंजी और महिला ने स्वस्थ शिशु को जन्म दिया। इस दौरान एंबुलेंस कर्मचारियों ने प्राथमिक उपचार और जरूरी देखभाल भी उपलब्ध कराई। प्रसव के बाद जच्चा और बच्चा दोनों को सुरक्षित है।

एमसीबी में सिक्योरिटी गार्ड के पद पर सीधी भर्ती

एमसीबी। जिले सहित आसपास के युवाओं के लिए सुरक्षा क्षेत्र में रोजगार पाने का बड़ा अवसर सामने आया है। सिक्योरिटी एण्ड इंटेलिजेंस सर्विसेज लिमिटेड (स्क्वेस) द्वारा भारत सरकार के पसारा अधिनियम 2005 के तहत एमसीबी जिले में विशेष भर्ती अभियान आयोजित किया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत सिक्योरिटी गार्ड, सुपरवाइजर एवं अन्य पदों पर योग्य अभ्यर्थियों की सीधी भर्ती की जाएगी। जनपद पंचायतों एवं शासकीय आईटीआई संस्थानों में आयोजित होने वाले इन भर्ती शिविरों के माध्यम से युवाओं को निजी सुरक्षा क्षेत्र में स्थायी रोजगार का अवसर मिलेगा। विभिन्न पदों पर भर्ती, योग्यता के अनुसार मिलेगा अवसर भर्ती अभियान के तहत कई पदों के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं- सुरक्षा जवान, शैक्षणिक योग्यता 10वीं पास, आयु सीमा 19 से 40 वर्ष, लंबाई 167 सेमी, वजन 56 से 100 किलोग्राम, सुरक्षा सुपरवाइजर, , शैक्षणिक योग्यता 12वीं पास, आयु सीमा 21 से 37 वर्ष तक होना चाहिए।

कुतुल के ग्रामीणों को मिली 4जी कनेक्टिविटी की सौगात

रायपुर। राज्य सरकार के दिशा-निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा नियद नेल्ला नार योजना, एलडब्ल्यूई-ढ्ढढ्ढ एवं आकांक्षी जिला कार्यक्रम के अंतर्गत अबूझमाड़ के दुर्गम और पूर्व में सुविधाओं से वंचित गांवों में अब मूलभूत सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है। इसी क्रम में अबूझमाड़ क्षेत्र में मोबाइल टॉवर स्थापित कर ग्रामीणों को संचार सुविधा से जोड़ा जा रहा है, जिससे वे देश-दुनिया की जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ आधुनिक संचार माध्यमों का उपयोग कर सकेंगे।

जिला मुख्यालय से लगभग 50 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम कुतुल में 16 जनवरी 2026 को नया मोबाइल टॉवर स्थापित किया

गया है। टॉवर शुरू होने से कुतुल सहित आसपास के क्षेत्रों में मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट सुविधा उपलब्ध हो गई है, जिससे ग्रामीणों में उत्साह का वातावरण है। अब क्षेत्र के लोग दूरसंचार सेवाओं का लाभ लेते हुए शासकीय योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे और उनसे जुड़कर लाभान्वित हो सकेंगे।

कलेक्टर नम्रता जैन ने कहा कि अबूझमाड़ के अंदरूनी क्षेत्रों में मोबाइल टॉवर स्थापित होने से स्थानीय निवासियों को बेहतर नेटवर्क कवरेज मिल रहा है। इससे ग्रामीणों को दैनिक जीवन में संचार की सुविधा प्राप्त हो रही है और वे अपने परिजनों से आसानी से संपर्क कर पा रहे हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि यह पहल अबूझमाड़ क्षेत्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और ग्रामीणों के लिए नए अवसरों के द्वार खोलेगी।

नक्सल मुक्त बीजापुर में विकास की नई दस्तक, बंद पड़े हाट-बाजारों में लौटी रौनक

बीजापुर। कभी माओवाद के आतंक और भय के कारण वीरान पड़े बीजापुर जिले के सुदूर वनांचल अब विकास, विश्वास और नई उम्मीदों की मिसाल बनते जा रहे हैं। नक्सलवाद से मुक्ति के बाद जिले के अंदरूनी क्षेत्रों में सामान्य जनजीवन तेजी से पटरी पर लौट रहा है। इसका सबसे जीवंत उदाहरण उसूर ब्लॉक के आवापल्ली क्षेत्र अंतर्गत पुजारी कांकेर और कोण्डापल्ली के साप्ताहिक बाजार हैं, जहां लगभग चार दशकों बाद फिर से रौनक लौट आई है।

एक समय ऐसा था जब इन क्षेत्रों में भय और असुरक्षा के कारण ग्रामीणों की आवाजाही लगभग बंद हो चुकी थी। माओवाद के प्रभाव के चलते यहां के पारंपरिक साप्ताहिक बाजार पूरी तरह ठप पड़ गए थे। लेकिन अब नक्सल मुक्त वातावरण बनने के बाद बाजारों में फिर से

चहल-पहल दिखाई देने लगी है। ग्रामीण, व्यापारी और आदिवासी बड़ी संख्या में यहां पहुंच रहे हैं, जिससे क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों को नई गति मिली है।

बस्तर अंचल केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता और खनिज संपदा के लिए ही नहीं, बल्कि वनोपज आधारित समृद्ध परंपराओं के लिए भी देशभर में जाना जाता है। यहां के साप्ताहिक हाट-बाजार स्थानीय संस्कृति, सामाजिक जीवन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। बीजापुर जिला चारों ओर से घने वनांचलों से घिरा हुआ है, जहां आदिवासी समुदाय का जीवन जंगल और वनोपज पर आधारित है। इमली, महुआ, टोरा, चिरौंजी, तेंदू जैसी बहुमूल्य वनोपज यहां के लोगों की आय का प्रमुख स्रोत हैं। ग्रामीण इन उत्पादों का संग्रहण कर साप्ताहिक बाजारों में विक्रय करते हैं तथा बदले में दैनिक जरूरत की वस्तुएं खरीदते हैं। इन बाजारों का महत्व केवल व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक मेल-मिलाप, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामुदायिक जीवन का भी केंद्र होते हैं।

उसूर ब्लॉक के पुजारी कांकेर और कोण्डापल्ली के साप्ताहिक बाजार कभी आसपास के अनेक गांवों की आर्थिक धुरी हुआ करते थे। लेकिन माओवादी गतिविधियों और असुरक्षा के माहौल ने इन बाजारों की रौनक छीन ली। धीरे-धीरे यहां व्यापार बंद हो गया और क्षेत्र आर्थिक रूप से प्रभावित होने लगा। अब जब क्षेत्र पूरी तरह नक्सल मुक्त हो चुका है, तब वर्षों से बंद पड़े बाजारों में फिर से दुकानें सजने लगी हैं। ग्रामीण दूर-दराज के गांवों से बाजार पहुंच रहे हैं। महिलाएं वनोपज लेकर आ रही हैं तो छोटे व्यापारी दैनिक उपयोग की सामग्री बेचने पहुंच रहे हैं। बाजारों में फिर से स्थानीय बोली, पारंपरिक वेशभूषा और आदिवासी संस्कृति की जीवंत झलक दिखाई देने लगी है।

पुनः प्रारंभ हुए ये साप्ताहिक बाजार स्थानीय आदिवासी समुदाय के लिए आर्थिक संबल बनकर उभर रहे हैं। ग्रामीणों को अब अपने उत्पाद बेचने के लिए दूरस्थ क्षेत्रों पर निर्भर नहीं रहना पड़ रहा है। इससे समय और संसाधनों की बचत हो रही है तथा स्थानीय स्तर पर आय के नए अवसर भी बढ़ रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

गृह ग्राम बायंग में श्रीरामनाम सप्ताह यज्ञ में शामिल हुए वित्त मंत्री ओ.पी. चौधरी

रायपुर। वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी अपने

गृह ग्राम बायंग में 17 मई से 24 मई तक आयोजित श्रीरामनाम सप्ताह यज्ञ में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने विधिवत पूजा-अर्चना कर भगवान श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त किया तथा प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की। वित्त मंत्री श्री चौधरी ने कहा कि श्रीरामनाम सप्ताह जैसे धार्मिक आयोजन हमारी संस्कृति, आस्था और सामाजिक एकता के प्रतीक हैं। ऐसे आयोजनों से समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और लोगों को आध्यात्मिक प्रेरणा मिलती है। उन्होंने आयोजन समिति और ग्रामवासियों को इस धार्मिक अनुष्ठान के सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन, ग्रामवासी और जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। श्रीरामनाम सप्ताह यज्ञ के दौरान प्रतिदिन धार्मिक अनुष्ठान, भजन-कीर्तन और प्रवचन का आयोजन किया जा रहा है।

राजस्व मंत्री श्री टंक राम वर्मा ने छोड़ा पायलट-फॉलो वाहनों का काफिला

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन के उच्च शिक्षा तथा

राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री टंक राम वर्मा ने प्रशासनिक तामझाम और वीआईपी कल्चर को दरकिनार करते हुए एक बेहद सराहनीय और अनुकरणीय पहल की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ऊर्जा बचत एवं संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के आह्वान से प्रेरित होकर, मंत्री श्री वर्मा ने अपने शासकीय दौरों और आवागमन के दौरान मिलने वाले पायलट और फॉलो वाहनों के उपयोग को तत्काल प्रभाव से बंद करने का निर्णय लिया है। मंत्री श्री वर्मा अपने पूरे स्टाफ के साथ बेहद सीमित और कम से कम गाड़ियों के काफिले में सफर करेंगे। राज्य स्तर पर उनके इस फैसले को सादगी और जनता के प्रति जवाबदेही के एक बड़े संदेश के रूप में देखा जा रहा है। अपने इस बड़े फैसले पर बात करते हुए कैबिनेट मंत्री टंक राम वर्मा ने कहा कि देश इस समय चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसे में देशहित से जुड़ी किसी भी पहल की शुरुआत हम जनप्रतिनिधियों को स्वयं से करनी चाहिए और समाज के सामने एक उदाहरण पेश करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि इस कदम से न केवल सरकारी और प्रशासनिक खर्चों में भारी कमी आएगी, बल्कि आम नागरिकों के बीच भी ईंधन संरक्षण और ऊर्जा बचत के प्रति एक सकारात्मक जागरूकता पैदा होगी।

सुको से टुटेजा को मिली जमानत, एसीबी ईओडब्ल्यू की टीम ने पेश किया पूरक चालान

रायपुर-नई दिल्ली। डीएमएफ घोटाला प्रकरण में पिछले ढाई साल से सलाखों के पीछे रहने वाले पूर्व आईएएस अफसर अनिल टुटेजा को सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को राहत देते हुए जमानत याचिका स्वीकार कर ली। इसी के साथ उन्होंने यह आदेश भी दिया कि जमानत अवधि में उन्हें सूबे से बाहर रहना होगा। सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश के बाद उन्हें मंगलवार को रिहा किया जाना है। लेकिन वहीं दूसरी ओर एसीबी ईओडब्ल्यू ने सोमवार को रायपुर के विशेष न्यायालय में इसी मामले को लेकर पूरक चालान पेश किया है ताकि टूटेजा को किसी भी प्रकार से सलाखों से बाहर ना आने दिया जाए। सोमवार को सुप्रीम कोर्ट की माननीय चीफ जस्टिस सूर्यकांत की एकल बेंच ने पूर्व आईएएस अनिल टुटेजा की जमानत प्रकरण पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। आरोपी अनिल टुटेजा की ओर से उनके वकील ने माननीय न्यायालय को जानकारी देते हुए बताया कि वे पिछले ढाई साल से जेल में बंद है। मामले में 85 गवाह हैं और आरोपी ट्रायल का इंतजार कर रहे हैं। वकील ने यह भी तर्क दिया गया कि टुटेजा उद्योग विभाग में संयुक्त सचिव थे और ठेके से संबंधित जिला कलेक्टरों द्वारा आदेश जारी किए जाते रहे हैं, इसमें उनकी कोई भूमिका नहीं है। वकील के इस तर्क पर माननीय न्यायालय ने टुटेजा को सशर्त जमानत देते हुए जस्टिस सूर्यकांत ने आदेश दिए कि जमानत अवधि के दौरान टुटेजा को छत्तीसगढ़ के बाहर रहना हो ताकि वे गवाहों को प्रभावित ना कर सके। साथ ही उन्हें एक हफ्ते के भीतर नया पता देने और हर सुनवाई की तारीख पर अदालत में हाजिर होने के निर्देश दिए गए हैं। उल्लेखनीय हैं कि अनिल टुटेजा को शराब और अन्य प्रकरणों में पहले ही जमानत मिल चुकी है।

लीलार व्यपवर्तन योजना के लिए 20.86 करोड़ रुपये स्वीकृत

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन, जल संसाधन विभाग द्वारा ससारंगढ़- बिलाईगढ़ जिले के विकासखण्ड-सारंगढ़ के अंतर्गत लीलार व्यपवर्तन योजना के निर्माण कार्यों हेतु 20 करोड़ 86 लाख रुपये स्वीकृत किये गये हैं। योजना से 930 हेक्टेयर खरीफ क्षेत्र में सिंचाई किया जाना प्रस्तावित है। योजना के कार्यों को पूर्ण कराने के लिए मुख्य अभियंता हसदेव कछार जल संसाधन विभाग बिलासपुर को प्रशासकीय स्वीकृति दी गई है।

छत्तीसगढ़ के 32 जिलों में लागू फॉरेंसिक मोबाइल वैन सिस्टम

गृह मंत्री शाह ने दिखाई हरी झंडी, छत्तीसगढ़ पुलिस अब होगी हाई टेक, अमित शाह ने दी 400 डॉयल-112 वाहनों की सौगात

रायपुर। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने आज सोमवार को राजधानी रायपुर में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह में छत्तीसगढ़ की 'अत्याधुनिक डायल 112' आपातकालीन सेवा और आधुनिक फॉरेंसिक मोबाइल वैन के बेड़े को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, उप-मुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री विजय शर्मा और छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे। शासन-प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में आयोजित इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य राज्य की आपातकालीन सहायता प्रणाली का विस्तार करना और नए आपराधिक कानूनों के तहत वैज्ञानिक अनुसंधान क्षमता को मजबूत करना है।

वर्ष 2018 से संचालित डायल 112 आपात सेवा का दायरा बढ़ाते हुए इसे अब राज्य के सभी 33 जिलों में पूरी तरह लागू कर दिया गया है, जो पहले केवल 16 जिलों तक सीमित थी। इस नए और उन्नत चरण के तहत संपूर्ण व्यवस्था को तकनीकी रूप से अधिक सक्षम और त्वरित बनाया गया है। सुरक्षा मानकों और सहायता क्षमता को मजबूत करने के लिए डायल 112 सेवा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित स्थान पहचान तकनीक को जोड़ा गया है, जिससे संकट में फंसे व्यक्ति की वास्तविक भौगोलिक स्थिति का सटीक पता लगाया जा सकेगा।

इसके साथ ही, आपातकालीन कॉल और आंकड़ों का संचालन बिना किसी बाधा के जारी रखने के लिए सिविल लाइंस स्थित प्राथमिक नियंत्रण केंद्र के अतिरिक्त नया रायपुर स्थित पुलिस मुख्यालय में वैकल्पिक बैकअप प्रणाली पर आधारित दूसरा नियंत्रण केंद्र भी सक्रिय किया गया है। यह केंद्र किसी भी तकनीकी समस्या या आपदा की स्थिति में स्वत: बैकअप के रूप में कार्य करेगा।

राज्यव्यापी सेवा विस्तार के तहत आज कुल 400 नए अत्याधुनिक आपातकालीन वाहन, 33 विशेष निगरानी वाहन तथा 60 नए राजमार्ग गश्ती वाहन विभिन्न जिलों के लिए रवाना किए गए। अब राज्य के नागरिक पारंपरिक दूरभाष कॉल के अलावा '112 इंडिया अनुप्रयोग', संकट संकेत सेवा, लघु संदेश सेवा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित संवाद प्रणाली, ईमेल, वेब अनुरोध तथा सामाजिक माध्यमों के जरिए भी आपातकालीन सहायता प्राप्त कर सकेंगे। महिला सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए इस व्यवस्था में पैनिक बटन और विशेष निगरानी सुविधाएं भी जोड़ी गई हैं, जिससे पुलिस सहायता, एम्बुलेंस, अग्निशमन सेवा तथा महिला सहायता हेल्पलाइन को एकीकृत मंच पर उपलब्ध कराया जा सकेगा।

नए आपराधिक कानूनों, विशेषकर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 176 के प्रभावी क्रियान्वयन से सभी गंभीर अपराधों में, जिनमें सात वर्ष या उससे अधिक की सजा निर्धारित है, घटनास्थल पर फॉरेंसिक विज्ञान दल की उपस्थिति और वैज्ञानिक साक्ष्य एकत्र करना अनिवार्य किया गया है।

आपराधिक न्याय प्रणाली को पूरी तरह साक्ष्य आधारित बनाने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य के सभी 33 जिलों के लिए आधुनिक फॉरेंसिक मोबाइल प्रयोगशालाओं का गठन किया है, जिनमें से 32 फॉरेंसिक मोबाइल वैन आज मैदानी कार्य के लिए रवाना की गईं। ये वैन घटनास्थल पर जांच करने वाले उपकरणों से सुसज्जित चलती-फिरती प्रयोगशालाएं हैं।

इन मोबाइल फॉरेंसिक वैन में रक्त नमूना परीक्षण किट, डिजिटल साक्ष्य संग्रहण उपकरण, सीसीटीवी दृश्य सामग्री निकालने की प्रणाली, अंतर्निहित जीपीएस, उच्च क्षमता वाले लैपटॉप, कंप्यूटर तथा निर्बाध विद्युत आपूर्ति के लिए जनरेटर लगाए गए हैं। साथ ही, रात अथवा कम रोशनी में साक्ष्य सुरक्षित करने के लिए इनमें विशेष रात्रि दृष्टि कैमरे और अन्य उच्च क्षमता वाले कैमरे भी स्थापित किए गए हैं।

इन वैन की सहायता से फॉरेंसिक विशेषज्ञ अपराध स्थल पर त्वरित रूप से पहुंचकर वैज्ञानिक साक्ष्यों को नष्ट होने से बचा सकेंगे तथा जैविक और डिजिटल नमूनों की प्राथमिक जांच मौके पर ही कर सकेंगे। इससे न्यायालय में पुख्ता साक्ष्य प्रस्तुत करने की प्रक्रिया अधिक तेज और प्रभावी होगी। यह संयुक्त पहल छत्तीसगढ़ में कानून-व्यवस्था के आधुनिकीकरण, वैज्ञानिक अनुसंधान प्रणाली के विस्तार तथा नागरिक सुरक्षा को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

प्रदेश की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है राज्य सरकार: मंत्री अग्रवाल

रायपुर। छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। इसी दिशा में पर्यटन, संस्कृति एवं धर्मस्व मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने सरगुजा जिले के उदयपुर विकासखंड के ग्राम फुलचुही एवं डांड़गांव में विभिन्न धार्मिक विकास कार्यों का विधिवत भूमिपूजन कर क्षेत्रवासियों को महत्वपूर्ण सौगात दी।

मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने उदयपुर विकासखंड के ग्राम फुलचुही स्थित पंचमुखी पहाड़ी में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सीढ़ी निर्माण एवं मंदिर भवन पुनर्निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। इसके साथ ही ग्राम डांड़गांव में मंदिर निर्माण कार्य की आधारशिला रखी। इन विकास कार्यों से न केवल श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होंगी, बल्कि क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

मंत्री श्री अग्रवाल ने कहा कि डबल इंजन की सरकार प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक परंपराओं को संरक्षित करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। उन्होंने कहा कि मंदिर केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं होते, बल्कि वे समाज की आस्था, संस्कृति, सामाजिक समरसता और परंपराओं के जीवंत प्रतीक भी हैं।

राज्य सरकार धार्मिक स्थलों का संरक्षण कर उन्हें सुविधायुक्त बनाने की दिशा में लगातार कार्य कर रही है ताकि श्रद्धालुओं को बेहतर वातावरण और मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंस उन्होंने आगे कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के कुशल मार्गदर्शन में प्रदेश के धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के समग्र विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। सरकार की मंशा है कि धार्मिक स्थलों का विकास केवल निर्माण कार्यों तक सीमित न रहे, बल्कि उन्हें स्थानीय अर्थव्यवस्था, पर्यटन और रोजगार से भी जोड़ा जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में मंदिरों और धार्मिक स्थलों के विकास से स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिलेगा, पर्यटन गतिविधियों का विस्तार होगा तथा युवाओं के लिए रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मंत्री श्री अग्रवाल ने कहा कि राज्य सरकार विरासत के संरक्षण और विकास के समन्वय की सोच के साथ कार्य कर रही है। प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक गौरव को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए जनभावनाओं के अनुरूप योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परंपराएं और धार्मिक आस्थाएं प्रदेश की अमूल्य धरोहर हैं, जिन्हें सहेजना और आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता है।

उन्होंने यह भी कहा कि धार्मिक स्थलों के विकास से सामाजिक सौहार्द और सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिलती है। राज्य सरकार गांव-गांव में सांस्कृतिक और धार्मिक अधोसंरचना के विकास के माध्यम से लोगों को अपनी परंपराओं और विरासत से जोड़ने का कार्य कर रही है।

पीडब्ल्यूडी के सचिव ने अधिकारियों व ठेकेदारों की ली बैठक

बस्तर में सड़कों और पुलों के काम में आएगी तेजी

रायपुर। लोक निर्माण विभाग के सचिव श्री मुकेश कुमार बंसल ने आज कोंडागांव में विभागीय अधिकारियों और ठेकेदारों की बैठक लेकर बीजापुर, दंतेवाड़ा और कोंडागांव में सड़कों और पुलों के निर्माणाधीन कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने इन कार्यों में तेजी लाते हुए दी गई समय-सीमा में काम पूरा करने को कहा। उन्होंने बरसात में सड़क संपर्क से कट जाने वाले गांवों के लिए बारहमासी सड़कों और पुलों के निर्माण के लिए प्राथमिकता से प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजने के निर्देश दिए। कोंडागांव की कलेक्टर सुश्री नुपुर राशि पन्ना, वन मंडलाधिकारी श्रीमती दिव्या गौतम, लोक निर्माण विभाग के प्रमुख अभियंता श्री वी.के. भतपहरी, मुख्य अभियंता भी श्री एम.एल. उरांव और श्री ज्ञानेश्वर कश्यप तथा अधीक्षण अभियंता श्री संजय सूर्यवंशी सहित तीनों जिलों के कार्यपालन अभियंता, अनुविभागीय अधिकारी और उप अभियंता भी बैठक में मौजूद थे।

लोक निर्माण विभाग के सचिव ने तीनों जिलों के विभागीय अधिकारियों को किसी भी ठेकेदार का भुगतान लंबित नहीं रखने के निर्देश दिए। उन्होंने ठेकेदारों द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर हर महीने भुगतान करने को कहा। श्री बंसल ने ठेकेदारों से कार्यस्थलों पर आ रही समस्याओं की जानकारी अधिकारियों से साझा करने को कहा। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को इन समस्याओं का त्वरित समाधान कर कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रगतिरत कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में हर हाल में पूर्ण करने के निर्देश ठेकेदारों को दिए।

विभागीय सचिव ने बैठक में लोगों की जरूरतों और उपयोगिता के आधार पर नई सड़कों और पुलों के निर्माण के प्रस्ताव प्राथमिकता से भेजने के निर्देश दिए। बस्तर के नक्सलमुक्त होने के बाद दूरस्थ और पहुंच विहीन गांवों में सड़कों व पुल-पुलियों के निर्माण तेजी से होने चाहिए। उन्होंने चालू वित्तीय वर्ष के बजट में शामिल दूरुतगामी सड़कों के निर्माण के लिए 15 अगस्त तक इस्टीमेट भेजने को कहा।

लोक निर्माण विभाग के सचिव ने सभी अधिकारियों को भवन, सड़क एवं पुल के कार्यों और उनकी प्रगति की पूरी जानकारी रखने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्माण सामग्रियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए भवनों में अच्छी गुणवत्ता के खिड़की, दरवाजे, टाइल्स, सेनेटरी, नल और पेंट्स का उपयोग करने को कहा। उन्होंने केशकाल घाटी बायपास सड़क के कार्यों में तेजी लाने वन मंडलाधिकारी को जल्द से जल्द पेड़ों की कटाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

श्री बंसल ने काम में ढिलाई बरतने वाले तथा गुणवत्ताहीन काम करने वाले ठेकेदारों के प्रति सख्ती करने को कहा। उन्होंने ऐसे ठेकेदारों को ब्लैकलिस्ट करने, डिग्रेड करने तथा टर्मिनेट करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी अधिकारियों को अपने मुख्यालयों में रहने, फील्ड का नियमित दौरा कर कार्यों का बारीकी से निरीक्षण करने तथा न्यायालयीन प्रकरणों में समय पर शासन का जवाब दाखिल करने के निर्देश दिए। उन्होंने सर्किट हाउसों और विश्राम गृहों का अच्छा रखरखाव सुनिश्चित करने भी कहा।

वित्त मंत्री ने रायगढ़ की प्रमुख विकास परियोजनाओं का किया निरीक्षण

- मरीन ड्राइव, नया बस स्टैंड, किसान राइस मिल ऑक्सीजोन और दूध डेयरी ऑक्सीजोन के कार्यों की प्रगति की समीक्षा

रायपुर। वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने रायगढ़ शहर में संचालित विभिन्न महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं का स्थल निरीक्षण कर निर्माण कार्यों की प्रगति और गुणवत्ता का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने मरीन ड्राइव, नए बस स्टैंड, किसान राइस मिल परिसर में विकसित किए जा रहे ऑक्सीजोन तथा दूध डेयरी ऑक्सीजोन के निर्माण कार्यों का अवलोकन किया। श्री चौधरी ने अधिकारियों और संबंधित एजेंसियों को निर्देशित किया कि सभी कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण हों तथा गुणवत्ता के साथ किसी भी प्रकार का समझौता न किया जाए। वित्त मंत्री श्री चौधरी ने कहा कि इन परियोजनाओं के पूर्ण होने से रायगढ़ शहर को आधुनिक और सुव्यवस्थित आधारभूत सुविधाएं मिलेंगी। मरीन ड्राइव शहरवासियों के लिए आकर्षक सार्वजनिक स्थल के रूप में विकसित होगा, नया बस स्टैंड यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करेगा, जबकि ऑक्सीजोन परियोजनाएं पर्यावरण संरक्षण के साथ नागरिकों को स्वच्छ और हरित वातावरण उपलब्ध कराएंगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य विकास कार्यों के माध्यम से नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाना है। इसके लिए सभी परियोजनाओं की नियमित निगरानी की जा रही है ताकि जनता को जल्द से जल्द इनका लाभ मिल सके। इस अवसर पर संबंधित विभागों के अधिकारी, जनप्रतिनिधि और निर्माण एजेंसियों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

20 को बंद रहेगी छत्तीसगढ़ सहित देश भर की मेडिकल दुकानें

रायपुर। छत्तीसगढ़ समेत पूरे देशभर के विभिन्न केमिस्ट और दवा विक्रेता संगठनों द्वारा 20 मई 2026 को राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया गया है। इस हड़ताल का मुख्य कारण ऑनलाइन दवाइयों की बिक्री का विरोध बताया जा रहा है। दवा व्यापारियों का कहना है कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के बढ़ते प्रभाव से पारंपरिक मेडिकल स्टोर्स के कारोबार पर गंभीर असर पड़ रहा है, साथ ही बिना उचित निगरानी के दवाइयों की बिक्री से मरीजों की सुरक्षा भी प्रभावित हो सकती है। छत्तीसगढ़ सहित देश के कई राज्यों में इस हड़ताल का व्यापक असर देखने को मिल सकता है। मेडिकल स्टोर्स बंद रहने की संभावना को देखते हुए राज्य सरकार और खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने आम जनता को राहत देने के लिए विशेष व्यवस्थाएं शुरू कर दी हैं। खाद्य एवं औषधि प्रशासन, छत्तीसगढ़ ने संभावित दवा संकट को रोकने के लिए सभी जिलों के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश जारी किए हैं।

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष कौशिक का मॉर्निंग वॉक के दौरान मोबाइल लूट

रायपुर। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक मॉर्निंग वॉक के दौरान मोबाइल लूट का शिकार हो गए। सिविल लाइन थाना क्षेत्र के पीडब्ल्यूडी ब्रिज के पास बाइक सवार बदमाशों ने इस वारदात को अंजाम दिया।सोमवार सुबह जब कौशिक पैदल चल रहे थे, तभी झपटमार उनके हाथ से मोबाइल छीनकर फरार हो गए। पूरी घटना इतनी तेजी से हुई कि वे संभल भी नहीं सके, रायपुर पुलिस ने पूर्व विधानसभा अध्यक्ष से लूट की इस वारदात की पुष्टि की है।

घटना के तुरंत बाद कौशिक ने पुलिस को सूचना दी। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले जा रहे हैं, ताकि आरोपियों की पहचान की जा सके।

पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, बदमाश बाइक पर सवार थे और वारदात को अंजाम देने के बाद तेजी से मौके से भाग निकले। पुलिस को शक है कि आरोपियों ने पहले रेकी की होगी। फिलहाल पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी है। अधिकारियों का दावा है कि जल्द ही बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

मोबाइल लूट पर भाजपा विधायक का अद्भुत बयान, रथ यात्रा से जोड़ दिया कनेक्शन

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल

कौशिक के साथ सुबह-सुबह हुई मोबाइल लूट की घटना ने जहां रायपुर पुलिस की परेशानी बढ़ा दी है, वहीं विपक्ष के साथ-साथ सत्तापक्ष के भी नेताओं को मुखर कर दिया है। घटना को लेकर तरह-तरह के बयान दे रहे हैं, लेकिन इनमें सबसे अद्भुत बयान भाजपा विधायक पुरंदर मिश्रा का है, जिन्होंने घटना का कनेक्शन रथयात्रा से जोड़ दिया है।

उड़िया भाषी पुरंदर मिश्रा ने घटना को लेकर कहा, 'कुछ लोग अपना खर्चा निकालने के लिए इस तरह के काम करते हैं। इनकी नियत खराब होती है, इसलिए मोबाइल चोरी कर ले जाते हैं। जैसे रथ यात्रा में लोग अलग-अलग मनोकामना लेकर निकलते हैं। कोई कलेक्टर बनने की मांग करता है, कोई कुछ और मांगता है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी निकलते हैं, जिनका उद्देश्य चप्पल चोरी करना होता है। भगवान छोटी मांग जल्दी पूरी कर देते हैं। मोबाइल भी उसी छोटी चीज की तरह है। मैं पुलिस से निवेदन करुंगा कि कि उस चोर को जल्द पकड़ा जाए।'

पुरंदर मिश्रा से पहले पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भी घटना को लेकर सोशल मीडिया में तुकबंदी में बयान दिया है, जिसमें उन्होंने मुख्यमंत्री साय के 'डायल 112' की 400 वाहनों के फ्लैग ऑफ के दौरान की तस्वीर साझा करते हुए कहा, 'आप डायल 112 को हरी झंडी दिखाते रहिए, उधर धरमलाल कौशिक का मोबाइल छिनकर चोर 9-2-11 हो गए हैं।'

पूर्व मुख्यमंत्री ने अपने पोस्ट में लिखा, 'छत्तीसगढ़वासी अपनी सुरक्षा स्वयं करें। अभी सूचना मिली है कि छत्तीसगढ़ भाजपा के वरिष्ठ नेता, बिल्हा विधायक, पूर्व नेता प्रतिपक्ष धरम लाल कौशिक जी के साथ आज मॉर्निंग वॉक के दौरान सिविल लाइन में लूटपाट हो गई है, चोर उनका मोबाइल छीनकर भाग गए।'

उन्होंने कहा, 'सोचिए जरा, जब देश के गृहमंत्री अमित शाह छत्तीसगढ़ में हैं, उस समय मॉर्निंग वॉक के दौरान ऐसी घटना कथित सुशासन पर तमाचा है। विज्ञापनजीवी सरकार को अब तक समझ जाना चाहिए कि सुशासन तिहार नाम की चाशनी लपेटने से कड़वी सच्चाई का स्वाद नहीं बदलेगा।'

डायल 112, चोर 9-2-11? पूर्व सीएम भूपेश ने धरमलाल कौशिक से लूट पर सरकार को घेरा

रायपुर। केंद्रीय गृहमंत्री शाह के छत्तीसगढ़ दौरे के बीच राजधानी रायपुर में सोमवार सुबह पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक के साथ मोबाइल लूट की घटना पर राजनीति शुरू हो गई है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सोशल मीडिया पर पोस्ट लिखते हुए भाजपा सरकार पर तीखा हमला किया। उन्होंने मुख्यमंत्री साय के डायल 112 की 400 वाहनों के फ्लैग ऑफ के दौरान की तस्वीर साझा की और कहा कि आप डायल 112 को हरी झंडी दिखाते रहिए, उधर धरमलाल कौशिक का मोबाइल छिनकर चोर 9-2-11 हो गए हैं।

पूर्व मुख्यमंत्री बघेल ने लिखा कि छत्तीसगढ़वासी अपनी सुरक्षा स्वयं करें। अभी सूचना मिली है कि छत्तीसगढ़ भाजपा के वरिष्ठ नेता, बिल्हा विधायक, पूर्व नेता प्रतिपक्ष धरम लाल कौशिक जी के साथ आज मॉर्निंग वॉक के दौरान सिविल लाइन में लूटपाट हो गई है, चोर उनका मोबाइल छीनकर भाग गए। सोचिए जरा, जब देश के गृहमंत्री अमित शाह छत्तीसगढ़ में हैं, उस समय मॉर्निंग वॉक के दौरान ऐसी घटना कथित सुशासन पर तमाचा है। विज्ञापनजीवी सरकार को अब तक समझ जाना चाहिए कि सुशासन तिहार नाम की चाशनी लपेटने से कड़वी सच्चाई का स्वाद नहीं बदलेगा। हर तरफ चोरी, चाकूबाजी, हत्या, लूटपाट की घटनाएं चरम पर हैं। साथ ही प्रदेश के सबसे निकम्मे गृहमंत्री रीलबाजी और स्वागतबाजी में व्यस्त हैं।

जानकारी के मुताबिक, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक सुबह करीब 8 बजे घर से टहलने निकले थे। इसी दौरान भारत माता चौक, शंकर नगर के पास बाइक सवार लुटेरे मोबाइल झपटकर फरार हो गए। घटना के बाद कौशिक ने तुरंत पुलिस को इसकी सूचना दी। सिविल लाइन थाना क्षेत्र की घटित घटना के बाद पुलिस आस-पास के सीसीटीवी फुटेज खंगालते हुए आरोपियों की तलाश में जुट गई है।

आरएसएस ने क्यों किया पाक के साथ बातचीत का आह्वान?

निस्तुला हेब्बर

पिछले सप्ताह, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की वैचारिक मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के दूसरे सबसे बड़े नेता दत्तात्रेय होसबोले ने एक साक्षात्कार में कहा कि भारत को पाकिस्तान के साथ बातचीत के प्रयास जारी रखने चाहिएं। इसके समय को लेकर भी काफी चर्चा हो रही है, क्योंकि ये जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 2025 में हुए आतंकी हमले के बाद चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर की पहली बरसी के ठीक बाद आई हैं। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार लगातार यह कहती रही है कि जब तक पाकिस्तान समर्थित आतंकी समूह भारत में हमले करते रहेंगे, तब तक कोई बातचीत नहीं हो सकती। आर.एस.एस. के पदाधिकारियों का कहना है कि होसबोले की टिप्पणियों का संदर्भ संगठन की दीर्घकालिक मान्यताओं से अधिक संबंधित था, न कि संवाद या चर्चा से। उनका कहना है कि होसबोले की टिप्पणियों को समग्र रूप से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पाकिस्तान के राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व पर भरोसा न होते हुए भी, आर.एस.एस. के नागरिक समाज सहभागिता संबंधी विचारों के अनुरूप, जनसंपर्क ही जुड़ाव का सबसे महत्वपूर्ण पहलू बना हुआ है। यह आर.एस.एस. की उन बातों से संबंधित हैं, जो वह काफी समय से कहता आ रहा है। अप्रैल 1964 में, दीनदयाल उपाध्याय और राम मनोहर लोहिया ने पाकिस्तान के साथ संबंधों पर एक संयुक्त बयान जारी किया। उस समय, लोहिया कांग्रेस विरोधी मोर्चे के लिए विपक्षी दलों से समर्थन जुटाते हुए भारतीय जनसंघ से संपर्क साध रहे थे, जो आर.एस.एस. का राजनीतिक अंग और भाजपा का पूर्ववर्ती संगठन था। लोहिया और उपाध्याय दोनों इस बात से सहमत थे कि भारत और पाकिस्तान का विभाजन ऐतिहासिक रूप से कृत्रिम आधारों पर आधारित सिद्ध हुआ है (जो आर.एस.एस. की अखंड भारत या अविभाजित भारतीय उपमहाद्वीप की अवधारणा में परिलक्षित होता है) और दोनों देशों की सरकारें हमेशा व्यापक वार्ता ढांचा स्थापित करने की बजाय टूटी-फूटी बातचीत और टूटे-फूटे विचार में लिप्त रहीं। इस वक्तव्य में अखंड भारत की अवधारणा को एक ढीले-ढाले ड्क्षहद-पाकिस्तान महासंघ के रूप में भी उल्लेख किया गया है। हाल ही में, आर.एस.एस. और स्वयं होसबोले ने भी संवाद की वकालत की। 2015 में, आर.एस.एस. के नेतृत्व में उसके सभी सहयोगी संगठनों के साथ हुई समन्वय बैठक के समापन पर, होसबोले ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा था, ''भारत सार्क का सदस्य है और पड़ोसी देशों के साथ उसके पारिवारिक सांस्कृतिक संबंध हैं।'' चाहे वह नेपाल हो, श्रीलंका, पाकिस्तान या बंगलादेश। यह एक ही इकाई थी जिसे विभाजित करके पाकिस्तान और बंगलादेश बनाया गया। यह स्वाभाविक है कि वहां रहने वाले लोग एक ही परिवार के सदस्य हैं। कभी-कभी रिश्ते बिगड़ जाते हैं, जैसे कि भाइयों के बीच होता है, इसलिए हमने इस बात पर भी चर्चा की कि हम उन लोगों के साथ अपने संबंधों को कैसे बेहतर बना सकते हैं जो ऐतिहासिक और भौगोलिक रूप से हमसे जुड़े हुए हैं। 2017 में भी भाजपा और आर.एस.एस. के बीच एक और संयुक्त बैठक के बाद इसी तरह की भावनाएं व्यक्त की गई थीं। इन टिप्पणियों को सकारात्मक घटनाक्रम बताते हुए कांग्रेस ने भारत में समझदारी की जीत की उम्मीद जताई। जम्मू-कश्मीर में नैशनल कांफ्रैंस के अध्यक्ष फारूख अब्दुल्ला ने कहा कि उन्हें खुशी है कि अब कोई यह सोच रहा है कि युद्ध कोई विकल्प नहीं है। पीपुल्स डैमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने कहा कि दोनों देशों के बीच मुद्दों को सुलझाने का एकमात्र रास्ता बातचीत ही है।

राहुल के राइट हैंड से कैसे छिनी केरल सीएम की कुर्सी?

अभिनय आकाश

10 दिन और कई दौर की लंबी बातचीत के बाद आखिरकार केरलम के नए सीएम के नाम पर मुहर लग गई है। वीडी सतीशन सूबे के 13वें मुख्यमंत्री होंगे। यह ऐलान 13 मई को हो जाना था लेकिन 14 मई को हुआ। 5 साल अब सतीश त्रिवेंद्रम की कुर्सी पर बैठने वाले हैं। अब कांग्रेस के भीतर इस टॉप पोस्ट के लिए दो और बड़े नामों की ज्यादा चर्चा थी। एक नाम की तो खूब थी। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल और केरल विधानसभा के पहले नेता प्रतिपक्ष रह चुके पहले मतलब पूर्व में रमेश रामकृष्णन चेन्नईथला कांग्रेस के सामने यह एक बहुत बड़ी चुनौती बन गई थी क्योंकि केसी वेणुगोपाल के बारे में कहा जाता है कि राहुल गांधी हर वक्त उनसे फोन पर टच में रहते हैं। किसी सूबे में मुख्यमंत्री चुनना हो, एलओपी चुनना हो, प्रदेश अध्यक्ष चुनना हो या पार्टी की कोई दूसरी बड़ी योजना हो, सबसे अहम सलाहकार की भूमिका केसी वेणुगोपाल के पास ही है। वही राहुल को एडवाइस करते हैं। फिर कुछ स्टैंडिंग रमेश चनेथला की भी थी। 4 मई को केरल विधानसभा के चुनाव के नतीजों में यूडीएफ यानी यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट एलडीएफ यानी कि लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट पर भारी पड़ा। पिनराई विजयन की सरकार चली गई। यूडीए ने 10 सालों बाद सत्ता में वापसी करते हुए 140 में से 102 सीटें जीत ली। अब कांग्रेस नीत गठबंधन चुनाव तो जीत गया था लेकिन फिर सीएम कौन होगा? तीन नाम थे। 10 दिन ड्रामा चला। फिर 3 मिनट में कहानी खत्म। वेणुगोपाल को शायद इसका अंदाजा नहीं था। सवाल है कि वेणुगोपाल की तपस्या में कोई कमी रह गई या फिर राहुल को उनकी अतिरिक्त या फिर यूं कह लें कि अपनी मर्जी की तपस्या पसंद नहीं आई। वेणुगोपाल सीएम नहीं बने तो क्या उनका बतौर संगठन महासचिव वाला जो रुतबा था या है अब वह पहले जैसा रह पाएगा? राहुल ने इस फैसले से क्या कर्नाटक, मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे किचकिच से खुद को और पार्टी को बचा लिया है।

इस कहानी की शुरुआत 20 की 21 की निराशाओं से होती है। पूरे देश में कांग्रेस पार्टी बुरी तरह चुनाव हारी थी। लेकिन एक प्रदेश था जहां पर अब भी उसकी सांसे दुरुस्त चल रही थी। यह प्रदेश था केरल का प्रदेश जहां पर 2014 में 12 सीटें जीती थी और उसके बाद भी प्रदर्शन खराब नहीं रहा था 2019 में। ऐसे में पार्टी को लग रहा था कि परंपराओं का पालन होगा। 2021 में लेफ्ट के नेतृत्व वाली सरकार हट जाएगी और यूडीएफ यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट सत्ता में आ जाएगी। सबसे ज्यादा इस बात का इंतजार कर रहे थे। कांग्रेस के विधायक पूर्व गृह मंत्री रमेश चेनीथला जो 5 वर्ष तक पिनराई विजय सरकार के मुकाबले नेता प्रतिपक्ष थे। पर ऐसा हुआ नहीं। कांग्रेस बुरी तरह लगातार दूसरा विधानसभा चुनाव हार गई। अब 5 बरस का और इंतजार था। इस बीच 2024 में लोकसभा चुनाव हुए और यूडीएफ केरल की 20 में से 18 सीटें जीत कर आई। यह विजयन के लिए एक बड़ा झटका था। 2025 में लोकल बॉडी के इलेक्शन हुए तो यहां भी कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ ने बड़ी जीत हासिल की। इस जीत के बाद तीन नेता थे जो केरल के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर एक तक नजर लगाए हुए थे। पहले रमेश चेनीथला 28 वर्ष की उम्र में मंत्री बन गए। चार बार सांसद रहे। छात्र राजनीति के जरिए कांग्रेस में मजबूत हुए। यूथ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे। कई सरकारों में मंत्री ओमन चांडी की सरकार में गृह मंत्री भी। उन्हें लग रहा था 71 की उम्र में वरिष्ठता का मेरा दावा सबसे ज्यादा मजबूत होगा। पार्टी ने उनकी वरिष्ठता को ध्यान में रखते हुए 2026 के विधानसभा चुनाव में उन्हें कैंपेन कमेटी का मुखिया भी बनाया था। दूसरे दावेदार थे आलाकमान के प्रिय केसी वेणुगोपाल। 28 वर्ष की उम्र में कासरगोर से 1991 में पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ते रहे। उन दिनों वह केरल के कद्दावर नेता और मुख्यमंत्री के करुणाकरण के खेमे में माने जाते थे। 1996 से उन्होंने विधानसभा चुनाव लड़ना शुरू किया 2006 तक यानी लगातार तीन विधानसभा चुनाव में जीत हासिल की। ओमान चांडी की सरकार में कुछ वक्त तक मंत्री भी रहे।

केसी वेणुगोपाल के बारे में कहा जाता है कि उन्हें अपने राजनीतिक आका चुनने और उनके हिसाब से पाला बदलने में महारत हासिल है। कभी करुणाकरण के खास हुआ करते थे। फिर करुणाकरण का सूर्य अस्त हुआ। एक के एंटनी मजबूत हुए तो केसी वेणुगोपाल ने रमेश च्नीथला का हाथ थाम लिया। चेन्नथला उन दिनों केरल की कांग्रेस में तीसरे मोर्चे की अगुवाई किया करते थे। चेन्नथला का यह चेला जब दिल्ली पहुंचा तो धीमे से गांधी परिवार में अपनी मजबूती बनाई और इसकी पटकथा लिखी गई 2009 के लोकसभा चुनाव में जब वह लोकसभा चुनाव जीतकर आए। 2014 में पार्टी के केरल से 12 सांसद थे। कांग्रेस अपने सबसे कमजोर स्तर पर थी। ऐसे में केरल के सांसदों को तरजीह देना आलाकमान के लिए लाजमी था और तब केसी वेणुगोपाल को पहली बार एक बड़ी जिम्मेदारी मिली पार्टी में चीफ व्हिप की। हालांकि उससे पहले यूपीए दो के दौरान भी वह कुछ वक्त के लिए राज्य मंत्री रहे थे। यहां से केसी वेणुगोपाल पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के करीब आना शुरू हो गए और इस पर आखिरी बड़ी मोहर लगी जब 2019 के उत्तरार्ध में अशोक गहलोत की जगह उन्हें पार्टी का संगठन महासचिव बनाया गया। यह कांग्रेस की कांग्रेस की दृष्टि से एक बड़ा पद था। उसके बाद केसी वेणुगोपाल राज्यसभा के रास्ते राजस्थान से दिल्ली पहुंचे। राज्यसभा के सांसद हो गए। लेकिन केसी को लग रहा था कि जब तक वो लोकसभा में राहुल गांधी के बगल वाली सीट पर नहीं होंगे तब तक उनका राजनीतिक कद और बड़ा नहीं होगा। ऐसे में उन्होंने 2 बरस का अंतराल रहने के बावजूद दो बरस अभी बाकी थे। उनकी राज्यसभा की सांसदी में वो पद छोड़ दिया और अल्पुजा से एक बार फिर से लोकसभा का चुनाव लड़े और जीते। इस चक्कर में कांग्रेस को राज्यसभा की एक सीट का नुकसान भी हुआ क्योंकि 2023 के उत्तरार्ध में राजस्थान में विधानसभा का अंकगणित नए चुनाव के बाद बदल चुका था। गहलोत चुनाव हार चुके थे।

मुख्यमंत्री चयन को लेकर कांग्रेस नेतृत्व के सामने कई राजनीतिक और संगठनात्मक समीकरण थे। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी की शुरुआती बैठकों के बाद भी सहमति नहीं बन सकी थी। इस बीच पार्टी के भीतर भी यह संदेश जाने लगा था कि पिछले पांच वर्षों में विपक्ष के नेता के तौर पर उन्होंने कांग्रेस को नई ऊर्जा दी। कांग्रेस नेतृत्व ने पूर्व प्रदेश अध्यक्षों और वरिष्ठ नेताओं से भी राय ली। कई नेताओं ने आगाह किया कि अगर सतीशन की दावेदारी नजरअंदाज की गई तो जनता में गलत संदेश जाएगा, क्योंकि 2021 की हार के बाद उन्होंने पार्टी को जमीन पर फिर खड़ा किया।

प्रियंका गांधी की एंट्री

प्रियंका वायनाड से सांसद हैं। केरल पर कोई भी फैसला बिना उनकी सहमति के कैसे होता? गांधी फैमिली की राय वैसे इस तरह के मामलों में अलग नहीं होती है। आपस में बैठकर विमर्श के बाद फिर पब्लिक का फीडबैक लिया जाता है। एक दावा तो ये भी किया जा रहा है कि अगले साल यानी 2027 के अक्टूबर में कांग्रेस अध्यक्ष के तौर पर मल्लिकार्जुन खड़गे का कार्यकाल समाप्त हो रहा है। ऐसे में हो सकता है कि राहुल जितना केसी को पसंद करते हैं, जितने उनके करीबी हैं और कहा जाता है कि वेणुगोपाल ने राहुल को आईने में उतार लिया है। तो हो सकता है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष पर भी उनकी नजर हो अगर यह ना मिले तो वह सही नहीं।

राहुल गांधी के जो आज के जो फेवरेट लोग हैं जिन पर वो ट्रस्ट करते हैं जो पार्टी के भीतर हैं वो दो ही लोग हैं। पहले हैं अजय माकन जिनके पास पार्टी के संसाधनों की चाबी है और दूसरे हैं वेणुगोपाल जिनको उन्होंने पार्टी सौंप रखी है। राहुल गांधी को हो सकता है कि यह चुनने में भी बड़ी मुश्किल आए कि वेणुगोपाल की जगह कौन लेगा। पिछले कुछ सालों में एक चीज जरूर हुई है कि वेणुगोपाल इतने शक्तिशाली हो गए हैं कि उन्होंने राहुल गांधी के दफ्तर को जरूर उनकी पावर को जरूर कंट्रोल किया है जो पहले एब्सोल्यूट पावर एंजॉय राहुल गांधी का ऑफिस करता था वो अब पूरी नहीं कर पाता है क्योंकि एक ही बात वो बार-बार कहते हैं जब भी कोई विषय आता है कि टॉक टू वेणू। तो ये जो टॉक टू वेणू है ये अपने आप में एक बहुत महत्वपूर्ण लाइन है कि आपको अपने दफ्तर के लोगों को भी आप ऐसे कह देते हो तो उसने उसने राहुल गांधी के दफ्तर की पावर्स को बहुत नीचे लेकर आया और राहुल ने अब्सोल्यूट पावर वेणु गोपाल को दी। लेकिन आज उस उसी का खामियाजा भी शायद वेणु गोपाल को भुगतना पड़ रहा होगा। बहरहाल, कहा जा रहा है कि राहुल ने फैसला इस बात पर नहीं लिया कि कौन उनके ज्यादा करीब है, बल्कि इस आधार पर लिया गया कि पार्टी के हित में क्या है। वेणु गोपाल की सेट की हुई गोटी में वो खुद ही गच्चा खा गए।

पुराण दिग्दर्शन ....

सन्देहाभासनिकारणाध्यायः (नौवां अध्याय)

(गतांक से आगे...)

अतः शङ्कावादी महा-दाय इस प्रत्यक्ष का अपलाप किस प्रकार कर सकते हैं? इस आख्यान के पौराणिक-स्वरूप के मूल शब्दों में ही यह स्पष्ट कर दिया गया है कि होता ने मन्त्र-बल से, वसिष्ठ जी ने तपोबल से तथा श्री शङ्कर भगवान् ने अपनी देव-सामर्थ्य से उक्त राजकुमार की निरगट की तरह काया पलट की थी, सो मन्त्र तपः और देव-सामर्थ्य के अलौकिक चमत्कारों को वेदादि सभी शास्त्र सहस्त्रमुखेन स्वीकार करते हैं, यथा-

यद् दुस्तरं यद् दुरापं यद् दुर्गं यच्च दुष्करम्।
सर्वं तु तपसा साध्यं, तपो हि दुरतिक्रमम्।।
(मनुस्मृति 11 ।238)

अर्थात्- जिसका पार न मिल सकता हो, जो वस्तु अप्राप्य हो, जहां पहुच न हो पाती हो, एवं जो किया न जा सकता हो वह सब तपोबल के प्रभाव से सिद्ध हो सकता है, क्योंकि तपः से बढ़कर अन्य कोई वस्तु नहीं।

योगदर्शन विभूति पाद में योगबल से होने वाले उन उन चमत्कारों का साङ्गोपाङ्ग विस्तृत विवेचन किया है कि जिनके पढ़ लेने मात्र से शङ्कावादियों की आँखें खुल जाती हैं। हम विस्तारभय से यहां वह सब प्रकरण उद्धृत नहीं कर सकते। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी अपने वेदभाष्य में ऐसे अनेक लोकोत्तर चमत्कारों का उल्लेख किया है, जिनको पीछे के प्रकरणों में देखा जा सकता है।

यहां तो मन्त्र, तपः और देव-सामर्थ्य के प्रभाव से काया पलट का उल्लेख है. परन्तु अब तो बड़े 2 पाश्चात्य डाक्टर साधारणतया भी यह बात मानते ही नहीं, बल्कि शारीरिक विज्ञान द्वारा सिद्ध करते हैं कि अमुक 2 साधनों से पुरुष को स्त्री और स्त्री को पुरुष बनाया जा सकता है। उनका कहना है कि स्त्री और पुरुष की जननेन्द्रिय में थोड़ा ही अन्तर है।

क्रमशः ...

राजा कुवलाश्व का नाम क्यों पड़ा 'धुंधुमार'

आशुतोष गर्ग

राजा पृथु के महान वंश में बृहदश्व नामक एक प्रसिद्ध और धर्मपरायण राजा हुए। उनके राज्य में सुख-शांति थी और प्रजा उन्हें पिता के समान मानती थी। वक्त आने पर अपने ज्येष्ठ पुत्र कुवलाश्व को राज्य सौंपकर उन्होंने खुद वन में जाकर तपस्या करने का निश्चय किया। जब राजा बृहदश्व वन जाने लगे, उसी समय उत्तंक मुनि उनके पास पहुंचे और बोले, 'राजन! आप कहां जा रहे हैं? आपके बिना प्रजा का क्या होगा? प्रजा की रक्षा करना ही आपका सबसे बड़ा धर्म है। जब तक आप इस कर्तव्य को नहीं निभाते, तब तक तपस्या भी सफल नहीं होगी। इसलिए, अभी वन जाना उचित नहीं है।'

यह कहने के उपरांत उत्तंक ने बृहदश्व को एक भयंकर संकट के विषय में बताया। वह बोले कि मेरे आश्रम के निकट एक विशाल मरुभूमि है, जहां 'उज्जानक' नाम का बालू से भरा समुद्र है। वहां धुंधु नाम का एक बलशाली राक्षस रहता है। धुंधु वर्ष में एक बार श्वास छोड़ता है, परंतु जब वह ऐसा करता है, तो भयंकर आंधी उठती है, उसकी धूल से सूर्य तक ढक जाता है, भूकंप आने लगता है और चारों ओर धुआं व अग्नि फैल जाती है।'

उत्तंक मुनि बताते हैं, 'इस कारण मैं अपने आश्रम में शांति से कोई भी कार्य नहीं कर पाता। राजन! यदि आप धुंधु का वध कर दें, तो मेरे साथ-साथ समस्त लोकों को शांति मिल जाएगी।'

यह सुनकर बृहदश्व कुछ देर विचार में डूबे, फिर बोले, 'मुनिवर! मैंने तो शस्त्र त्याग दिए हैं, परंतु मेरा पुत्र कुवलाश्व इस कार्य को अवश्य पूरा करेगा।' फिर उन्होंने अपने पुत्र कुवलाश्व को बुलाकर कहा, 'वत्स! मुनि के साथ-साथ समस्त लोकों की शांति के लिए तुम्हें धुंधु का वध करना है। प्रजा व ऋषियों की रक्षा करना तुम्हारा धर्म है।' यह कहकर बृहदश्व वन की ओर चले गए। अब कुवलाश्व अपने सौ वीर पुत्रों और ऋषि उत्तंक के साथ धुंधु का वध करने निकल पड़े। भगवान विष्णु ने लोक-हित के लिए अपना दिव्य तेज कुवलाश्व में प्रविष्ट करा दिया। उसी क्षण आकाशवाणी हुई कि यह राजा (कुवलाश्व) अवश्य ही धुंधु का वध करेगा।

कुवलाश्व और उनके पुत्र वहां पहुंचे, जहां धुंधु छिपकर रहता था। उन्होंने बालू के विशाल समुद्र को खोदना प्रारंभ किया और धुंधु का पता लगा लिया। इसी बीच धुंधु उठ गया और जब उसने देखा कि कुवलाश्व के पुत्र बालू खोद रहे हैं, तो उसके मुख से अग्नि की ज्वालाएं निकलने लगीं और साथ ही भयंकर जल-प्रवाह उमड़ पड़ा। वह अग्नि इतनी प्रचंड थी कि उसने कुवलाश्व के सौ पुत्रों में से केवल तीन को छोड़कर शेष सबको जला दिया। अपने पुत्रों को इस प्रकार नष्ट होते देखकर भी कुवलाश्व बिना विचलित हुए आगे बढ़े और उन्होंने अपने योगबल से उस प्रचंड जल-प्रवाह को पी लिया तथा अग्नि को शांत कर दिया।

इसके बाद उन्होंने उस महाबली राक्षस धुंधु का वध भी कर दिया। धुंधु के मरते ही समस्त लोकों में शांति व्याप्त हो गई और धुंधु के कारण फैला भय भी समाप्त हो गया। मृत धुंधु को देखकर ऋषि अत्यंत प्रसन्न हुए। इस प्रकार धुंधु को मारने के कारण कुवलाश्व 'धुंधुमार' नाम से प्रसिद्ध हुए और लोग उनका यश युगों-युगों तक जगत में गाते रहे।

ट्रंप की चीन यात्रा: बड़े बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले

तनवीर जाफ़री

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गत 13-14 मई को चीन का बहुप्रतीक्षित दौरा किया। विश्व की इन दोनों महाशक्तियों के प्रमुखों की मुलाक़ात पर पूरे विश्व की निगाहें लगी हुई थीं। ख़ासकर अमेरिका-ईरान के मध्य चल रहे तनाव के बीच इस मुलाक़ात को काफ़ी अहम माना जा रहा था। दुनिया की नज़रें इस बात पर भी टिकी थीं कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जोकि अनेक फ़्राँस,ब्रिटेन व यूक्रेन जैसे कई देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ अपनी असामान्य हरकतों से पेश आने व असहज करने वाले बयानों के लिये सुर्ख़ियों में रहते हैं, आख़िर चीन में उनकी भाषा,रवैय्या व बर्ताव कैसा रहेगा। बहरहाल,जिस अमेरिकी राष्ट्रपति के आगमन पर दुनिया के तमाम देश अपनी पलकें बिछाये रहते हैं और प्रायः अमेरिकी राष्ट्रपति के समकक्ष ही हवाई अड्डे पर उनका स्वागत करते हैं वहीं बीजिंग में उनके स्वागत के लिये चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग स्वयं नहीं पहुंचे बल्कि उपराष्ट्रपति हान झेंग ने राष्ट्रपति ट्रंप का स्वागत किया। हान झेंग हालांकि सीधे तौर पर चीन के विदेश मंत्री नहीं हैं परन्तु विदेश मामलों में उनकी भूमिका मुख्यतः कूटनीतिक प्रतिनिधित्व, उच्च-स्तरीय मुलाक़ातें , और द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने की होती है।

ट्रंप और जिनपिंग के बीच बीजिंग में हुई एक उच्च स्तरीय बैठक के दौरान घटी एक असामान्य घटना ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी तरफ़ खींचा। बैठक के दौरान चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के अपने स्थान से उठने के बाद ट्रंप ने शी जिनपिंग के पास रखी उनकी व्यक्तिगत डायरी के पन्ने पलट कर चुपके से झांकने की कोशिश की। निजी ताक-झांक की इस हरकत को विशेषज्ञों व अंतर्राष्ट्रीय मीडिया द्वारा ट्रंप की व्यक्तिगत शैली से जोड़कर देखा गया। इस घटना को दस्तावेज़ या नोट में बिना पूछे झांकना, दूसरे नेता को पलायन या नियंत्रण की स्थिति में दिखाना और संवाद दौरे के दौरान नर्म दबाव बनाने की चाल चलना आदि के रूप में भी परिभाषित किया गया। दुनिया ने चीन दौरे के दौरान उसी राष्ट्रपति ट्रंप राष्ट्रपति शी जिनपिंग की बॉडी लैंग्वेज पर भी नज़र रखी।

राष्ट्रपति ट्रंप चीन में अत्यंत संतुलित भाषा का प्रयोग करते और अपने चीनी समक्ष के सामने पूरी नरमी से पेश आते दिखाई दिये। अपनी चीन यात्रा के बाद अमेरिकी प्रशासन और स्वयं राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा कई स्तरों पर बयान जारी किए गए जिनमें इस यात्रा को ऐतिहासिक और सफल बताया गया। ट्रंप ने अमेरिका वापस लौटने के बाद कहा कि शी जिनपिंग के साथ हुई बैठक को इतिहास में दो महान शक्तियों (जी 2) की ऐतिहासिक मुलाक़ात के रूप में याद किया जाएगा।उन्होंने इस मुलाक़ात को अविस्मरणीय भी कहा। उन्होंने बताया कि यह दो महान देशों के नेताओं की मुलाक़ात थी । चीन यात्रा के बाद ईरान पर बोलते हुए ट्रंप ने कहा कि अमेरिका और चीन दोनों यह मानते हैं कि ईरान को परमाणु हथियार नहीं मिलने चाहिए और हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य को तुरंत खोलना ज़रूरी है। परन्तु यह बात ट्रंप ने अमेरिका जा कर तो कही जबकि चीन की ओर से अपने बयान में इस बात का कोई ज़िक्र नहीं हुआ। ट्रंप ने अपनी इस यात्रा को सौदेबाज़ी की सफलता और अमेरिकी उद्योगों के लिए बड़े अवसर के रूप में भी पेश किया। उधर चीन की ओर से ट्रंप को ताइवान को लेकर सख़्त शब्दों में चेतावनी दी गयी जिसके बाद ताइवान मुद्दे पर ट्रंप की भाषा और रुख़ दोनों ही बदल गये। ट्रंप की यात्रा के बाद चीन ने अपनी रेड लाइन को दोहराया और ख़ासकर ताइवान मुद्दे पर अपना सख़्त लहजा रखा। चीनी विदेश मंत्रालय और राष्ट्रपति पक्ष के बयानों में ताइवान को अपना अविभाज्य हिस्सा बताया गया और यह चेतावनी दी गई कि अगर अमेरिका ने ताइवान के साथ सैन्य रणनीतिक संबंध बनाए या ताइवान को अधिक हथियार बेचे, तो यह दोनों ताक़तों के बीच टकराव और यहां तक कि संघर्ष को न्यौता दे सकता है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने ट्रंप के समक्ष चेतावनी भरे अंदाज़ में स्पष्ट शब्दों में ज़ोर देकर कहा कि ताइवान मुद्दा पूरी तरह चीन का आंतरिक मामला है और किसी बाहरी ताक़त को इसमें हस्तक्षेप करने की इजाज़त नहीं दी जाएगी। उन्होंने चेतावनी दी, अगर इसे सही तरीक़े से नहीं संभाला गया तो दोनों देश टकराव या यहां तक कि संघर्ष की स्थिति में पहुंच सकते हैं। संभवतः यह पहला अवसर था जबकि किसी राष्ट्राध्यक्ष ने अमेरिकी राष्ट्रपति के समक्ष चेतावनी भरे लहजे में टकराव और संघर्ष की बात कही हो।

चीन की इस चेतावनी के बाद जो अमेरिका व्यवहार में ताइवान को अपना सबसे बड़ा राजनीतिक व सैन्य सहयोगी मानता आया है, उसे चीन से अपनी सुरक्षा के नाम पर हथियार देता है और चीन के विरोध के बावजूद उसकी स्वतंत्र जैसी स्थिति को बनाए रखने के लिए रणनीतिक तौर पर समर्थन देता है। उसी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ताइवान को चीन से वापसी के बाद अब औपचारिक रूप से ताइवान को आज़ादी का ऐलान करने के ख़िलाफ़ चेतावनी दे दी है। ट्रंप ने कहा है कि मैं नहीं चाहता कि कोई स्वतंत्रता की ओर बढ़े। ट्रंप ने यह भी कहा कि सोचिए, हमें युद्ध लड़ने के लिए 9,500 मील दूर जाना पड़ेगा। मैं ऐसा नहीं चाहता। मैं चाहता हूं कि हालात शांत हों। मैं चाहता हूं कि चीन भी शांत रहे। ग़ौरतलब है कि जो अमेरिका क़ानूनी तौर पर ताइवान को आत्मरक्षा के लिए संसाधन मुहैया कराने के लिए बाध्य था उसी अमेरिका को चीनी राष्ट्रपति की चेतावनी के बाद चीन के साथ कूटनीतिक संबंध बनाए रखने के कारण अब संतुलन साधना पड़ रहा है। उधर चीन स्पष्ट रूप से ताइवान को अपने क्षेत्र का हिस्सा मानता है। और वो ये भी कहता रहता है कि जरूरत पड़ने पर वह बल प्रयोग से उसे अपने अधीन कर सकता है।

चीन ने ईरान युद्ध को लेकर भी अमेरिकी रुख़ का समर्थन करने के बजाये इसे इस तरह की लड़ाई बताया जो मूल रूप से होनी ही नहीं चाहिए थी गोया अमेरिका-इस्राईल द्वारा ईरान पर थोपा गया युद्ध। चीन ने अमेरिका और ईरान के बीच जल्द समाधान की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया। व्यापारिक स्तर पर भी ट्रंप को उतनी बड़ी सफलता हासिल नहीं हुई जितनी उम्मीद की जा रही थी। क्योंकि उनके साथ एलन मस्क,टिम कुक,जेन्सेन हुआंग,संजय मेहरोत्रा,केली ऑर्टबर्ग जैसे विश्व के 17 प्रमुख अमेरिकी उद्योगपति और कॉर्पोरेट अधिकारी बीजिंग गए थे। कुल मिलाकर ट्रंप को बीजिंग से जहां ताइवान को लेकर चेतावनी मिली वहीं ईरान मामले को लेकर भी अपेक्षित सहयोग नहीं मिल सका। ट्रंप की इस यात्रा के लिये बस यही कहा जा सकता है कि बड़े बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले।

आज का इतिहास

1926 बेनितो मुसोलिनी ने इटली को फांसीवादी राष्ट्र घोषित किया।
1930 श्वेत महिलाओं को साउथ अफ्रीका में वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ।
1939 विंस्टन चर्चिल ने 19 मई, 1939 को ब्रिटिश रूसी नाजी विरोधी समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस प्रकार दोनों देशों ने द्वितीय विश्व युद्ध के एक हिस्से के रूप में जर्मनी के खिलाफ एक गठबंधन बनाया।
1943 19 मई, 1943 को होलोकॉस्ट के बाद बर्लिन को जुडेनरिन के रूप में घोषित किया गया था, जिसमें एक नरसंहार हुआ था, जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजी शासन और उसके सहयोग से लाखों यहूदियों की मौत हो गई थी।
1962 अमेरिकी राष्ट्रपति जॉनएफ के लिए एक टेलीविजन जन्मदिन समारोह के दौरान। न्यूयॉर्क सिटी के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में कैनेडी, अभिनेत्री और मॉडल मैनलीन मुनरो ने हैप्पी बर्थडे टू यू का अपना बदनाम प्रदर्शन किया।
1971 मंगल 2, मंगल कार्यक्रम की मानव रहित अंतरिक्ष जांच, सोवियत संघ द्वारा 19 मई, 1971 को शुरू की गई थी। मार्स 2 का लैंडर मंगल की सतह तक पहुंचने वाला पहला मानव निर्मित वस्तु बन गया।
1976 19 मई, 1976 को सोने की खरीद और बिक्री के लिए ऑस्ट्रेलियाई निवासियों की स्वतंत्रता पर राष्ट्रमंडल प्रतिबंध हटा दिया गया था। ईलियर किसी को भी ऑस्ट्रेलिया में रिजर्व बैंक या बैंक द्वारा अधिकृत व्यक्ति के अलावा सोने के स्वामित्व और व्यापार के लिए अधिकृत नहीं किया गया था।
1986 फायरस्टार ओनर्स प्रोटेक्शन एक्ट 19 मई, 1986 से प्रभावी, संयुक्त राज्य अमेरिका की कांग्रेस सरकार द्वारा पारित किया गया था। इसने यूनाइटेड स्टेटेड फेडरल लॉ के तहत गन कंट्रोल एक्ट, 1968 के कई प्रावधानों को संशोधित किया है।
1991 स्थानीय सर्ब आबादी द्वारा बहिष्कार के बावजूद, क्रोएशिया के मतदाताओं ने यूगोस्लाविया के समाजवादी संघीय गणराज्य से स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए एक जनमत संग्रह पारित किया।
1997 सिएरा गॉर्डा बायोस्फीयर, जो मेक्सिको में सबसे अधिक विविध क्षेत्र को शामिल करता है, कोग्रोगोट्स प्रयासों के परिणामस्वरूप स्थापित किया गया था।
2002 पूर्वी तिमोर चार सदियों की दासता के बाद नयी सहस्त्राब्दी के पहले नये राष्ट्र के रूप में विश्व मानचित्र पर उभरा।
2009 श्रीलंका ने 19 मई, 2009 को ख्क्ष्ञ्जश्व (लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम) के खिलाफ 26 साल के गृहयुद्ध के बाद जीत की घोषणा की।

देश की अजेय आस्था का संकल्प सोमनाथ

अन्नपूर्णा देवी

भगवान श्रीकृष्ण के ये कालजयी वचन, 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः' (आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न अग्नि जला सकती है) केवल मनुष्य की देह पर ही नहीं, बल्कि भारत की उस सांस्कृतिक परंपरा पर भी खरे उतरते हैं, जिसका हृदय सोमनाथ है। भारत की चेतना इतिहास के धूल-धूसरित पन्नों में दबी हुई कोई याद नहीं है, बल्कि यह हमारे तीर्थों की पवित्रता और जन-जन की सांसों में धड़कता हुआ जीवंत सत्य है। सोमनाथ मंदिर इसी सत्य का वह सूर्य है, जिसने सदियों के घोर अंधकार, बर्बर आघातों और इतिहास के झंझावातों को सहा है, लेकिन अपनी आभा को इसने कभी धूमिल नहीं होने दिया। यह मंदिर इसका साक्षी है कि पंथ और मत बदल सकते हैं, सत्ताएं आ और जा सकती हैं, परंतु भारत की सनातन चेतना का प्रवाह कभी नहीं रुकता।

सोमनाथ मात्र एक मंदिर नहीं है, बल्कि यह भारत के स्वाभिमान का वह हिमालय है, जो झुकना नहीं जानता। इसके पुनरोद्धार की 75वीं वर्षगांठ उस राष्ट्रीय संकल्प की सिद्धि है, जिसकी नींव लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने रखी थी। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब सोमनाथ को भारत की 'अपराजेय आत्मा' कहा, तब उन्होंने वास्तव में उस 'नव-भारत' का ही आह्वान किया, जो अपनी विरासत के बल पर आधुनिकता के अनंत आकाश को छूने का सामर्थ्य रखता है। यह पुनर्जागरण आत्म-ग्लानि को त्याग कर आत्म-गौरव को अपनाने की यात्रा है, उस 'अमृत काल' की घोषणा है, जिसमें स्वतंत्र भारत ने अपनी विस्मृत जड़ों की ओर गौरव के साथ लौटने का संकल्प लिया है। जैसा कि देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने कहा था, 'सोमनाथ इस बात का प्रतीक है कि अद्वितीय श्रद्धा और विश्वास को कभी नष्ट नहीं किया जा सकता।'

झारखंड की इस पावन धरा का प्रतिनिधित्व करते हुए, जहां की माटी के कण-कण में 'धरती आबा' भगवान बिरसा मुंडा का त्याग और जनजातीय अस्मिता का गौरव रचा-बसा है, मैं सोमनाथ की इस चेतना को अपने परिवेश से गहराई से जुड़ा हुआ महसूस करती हूं। जिस प्रकार सोमनाथ ने बाहरी आक्रांताओं के सामने अपना मस्तक नीचा नहीं होने दिया, उसी प्रकार हमारे झारखंड के वीरों और फूलो-झानो जैसी वीरांगनाओं ने जल, जंगल और जमीन की रक्षा के साथ-साथ भारतीय जीवन-मूल्यों की रक्षा के लिए 'उलगुलान' किया।

सोमनाथ की लहरों की गर्जना और झारखंड के जंगलों में गूंजते स्वाभिमान का

स्वर एक ही है। यह हमें सिखाता है कि जब तक हमारी जड़ें और प्रकृति के प्रति हमारा सम्मान सुरक्षित है, तब तक राष्ट्र का वृक्ष सदैव पल्लवित होता रहेगा। सोमनाथ का पत्थर-पत्थर संघर्ष की गाथा कहता है, तो झारखंड का पर्वत-पर्वत अदम्य साहस की कहानी सुनाता है। आज जब हम 'भव्य काशी, दिव्य अयोध्या और वैभवशाली सोमनाथ' के साक्षी बन रहे हैं, तब यह स्पष्ट है कि भारत का वास्तविक उत्थान उसकी जड़ों को सींचने से ही संभव है। प्रधानमंत्री का विजन 'विरासत भी, विकास भी' केवल एक नीतिगत वक्तव्य नहीं है, बल्कि एक युग-परिवर्तनकारी सांस्कृतिक दर्शन है।

जिस प्रकार सोमनाथ का पुनर्निर्माण भारत के खोए हुए सांस्कृतिक आत्मविश्वास की पुनर्स्थापना थी, ठीक उसी प्रकार आज 'विकसित भारत 2047' का संकल्प हमारे आर्थिक, सामाजिक और नैतिक पुनरोद्धार का वह सांस्कृतिक महायज्ञ है, जिसमें हर नागरिक अपनी कर्मठता से योगदान देने को तत्पर है। प्रधानमंत्री के विजन के अनुरूप-यह आधुनिक कनेक्टिविटी और सुविधाओं के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था, आजीविका और 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को सशक्त करने की एक राष्ट्र-साधना है।

एक महिला और जनसेवक के रूप में मैं सोमनाथ की स्थिरता और भारतीय नारी के मौन धैर्य में एक अद्भुत साम्य देखती हूं। समय साक्षी है कि भारत की सांस्कृतिक निरंतरता को अक्षुण्ण रखने में हमारी मातृशक्ति का योगदान अतुलनीय रहा है। जब सोमनाथ पर संकट के बादल छाये थे और मंदिर उपेक्षित था, तब पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर ने ही साहस दिखाया और मुख्य मंदिर के समीप शिव अर्चना के लिए एक नवीन मंदिर का निर्माण करवाया, ताकि भक्ति की अखंड ज्योति कभी बुझने न पाये। उन्होंने सोमनाथ के गौरव को पुनर्स्थापित करने का जो संकल्प लिया था, वही हमारी नारी शक्ति की असली पहचान है। सोमनाथ को कितनी ही बार खंडित करने का प्रयास किया गया, परंतु वह हर बार पहले से अधिक भव्य और दिव्य होकर खड़ा हुआ। ठीक वैसे ही, भारत की मातृशक्ति ने-चाहे वह झारखंड के सुदूर वनांचलों की श्रमशील बहनें हों या महानगरों के कॉरपोरेट जगत में नेतृत्व करती बेटियां-सदियों के संघर्षपूर्ण कालखंड में भी हमारे संस्कारों की लौ को अपनी आस्था के आंचल में सुरक्षित रखा है।

नारी ही इस राष्ट्र की 'सांस्कृतिक रीढ़' है। हमारी संस्कृति में 'शक्ति' की उपासना के बिना शिव का स्वरूप भी पूर्ण नहीं माना जाता। आज 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' से लेकर 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' जैसे युगांतरकारी निर्णय इसी सत्य की पुष्टि करते हैं कि जब मां स्वस्थ और बेटी शिक्षित तथा सशक्त होगी, तभी राष्ट्र की नींव वज्र के समान सुदृढ़ होगी। हम केवल महिलाओं का विकास ही नहीं कर रहे, बल्कि महिलाओं के नेतृत्व में राष्ट्र का विकास भी सुनिश्चित कर रहे हैं। सोमनाथ जैसे तीर्थ उपासना के साथ-साथ स्वावलंबन और आत्म-गौरव की जीवंत पाठशालाएं हैं। आज जब हम 'विकसित भारत' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं, तब हमारी सफलता का मूलमंत्र यह है कि हम एक हाथ में उपनिषदों का शाश्वत ज्ञान रखें और दूसरे हाथ में आधुनिक तकनीक का अजेय सामर्थ्य। हमारी सफलता की उड़ान की शक्ति हमारी जड़ों से ही आती है।

सोमनाथ का वैभव हमें यह शाश्वत संदेश देता है कि भारत की आत्मा अमर है, सनातन है। यह वही राष्ट्र है, जिसने हर संघर्ष से उत्कर्ष तक की यात्रा अपनी आस्था के बल पर तय की है। सोमनाथ के विशाल समुद्र तट से सम्मेद शिखर (पारसनाथ पहाड़ी) की शांत ऊंचाइयों तक और कच्छ के रण से लेकर कोडरमा के अभ्रक अंचलों तक-भारत की चेतना एक है, अखंड है। सोमनाथ की यह पावन धरा आने वाली पीढ़ियों को सदैव यह मंत्र देती रहेगी कि राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके पत्थरों या भौगोलिक सीमाओं में ही नहीं, बल्कि उसके चरित्र, उसकी अजेय नारीशक्ति और उसके सामूहिक प्राण-तत्व में निहित है। यही हमारी पहचान है, यही हमारी साझा विरासत है और यही 'विकसित भारत' का अचल आधार भी है। जय सोमनाथ! जय जोहार! जय हिंद!

तृणमूल और भारतीय साम्यवाद का अंत?

अभिलाष खांडेकर

मुझे नहीं पता कि चुनावी शब्दावली में 'सत्ता-विरोधी लहर' जैसे जटिल राजनीतिक शब्दों का प्रयोग किसने और कब किया। तर्कसंगत रूप से, मुझे आश्चर्य होता है कि यह अदृश्य कारक कैसे एक राज्य में काम करता है, जबकि दूसरे में उसी समय विफल हो जाता है! पांच राज्यों में हुए हालिया चुनाव भी अपवाद नहीं थे; उन्होंने किसी न किसी तरह से चौंकाने वाले परिणाम दिए। 'सत्ता-विरोधी लहर' ने ममता बनर्जी को खासा नुकसान पहुंचाया; इसने दक्षिण में एमके स्टालिन और अस्सी वर्षीय पिनाराई विजयन को भी सत्ता से बेदखल कर दिया, लेकिन उत्तर-पूर्व में इसने एक मुख्यमंत्री को बचा लिया! क्या लंबे समय से चले आ रहे इस राजनीतिक अनुभव में कुछ बदलाव आ रहा है? या फिर भाजपा ने इसका दोनों तरह से इस्तेमाल करने की कला में महारत हासिल कर ली है? उदाहरण के लिए, सत्ता-विरोधी भावनाएं, अगर थीं भी, तो बंगाल में पूरी तरह से घिरी हुई 71 वर्षीय ममता के खिलाफ बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया गया, लेकिन कांग्रेस से पाला बदलकर आए हिमंत बिस्वा सरमा के खिलाफ कुछ भी काम नहीं आया! ऐसा क्यों हुआ? भाजपा ने तो असम में लगातार तीसरी बार जीत हासिल की। ममता और उनकी क्षेत्रीय पार्टी की तमाम मुश्किलों के बावजूद मतों के चार प्रतिशत से भी कम के अंतर से पराजय का श्रेय 'सुनियोजित' या 'क्यूरेटेड' चुनावों को दिया जा रहा है। यह चुनावी शब्दावली में एक नया मुहावरा है। लेकिन मुझे एक और कारण से दुःख होता है। द्रमुक और तृणमूल जैसी क्षेत्रीय पार्टियां - जो लोकतंत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है - के पतन के साथ नई भाजपा के नेतृत्व वाले 'पूंजीवादी भारत' में एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में साम्यवाद भी मरता दिख रहा है। केरल में सत्ता विरोधी लहर के कारण सीपीआई के नेतृत्व वाले गठबंधन को करारी हार का सामना करना पड़ा और प। बंगाल में, जहां दशकों तक वामपंथियों का वर्चस्व रहा, भगवा लहर में केवल एक विधायक ही बच पाया। अब जबकि भाजपा ने अपनी कट्टर प्रतिद्वंद्वी तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से बेदखल करने का सपना सच कर दिखाया है, उस पर यह साबित करने का दबाव है कि वह पश्चिम बंगाल में सुशासन लौटाए, जहां लाखों 'घुसपैठिए' सीमा पार से घुस आए हैं और अवैध रूप से रह रहे हैं। उन्हें बाहर करना होगा। उद्योगों को भी बड़े पैमाने पर स्थापित करना होगा और बेहतर कानून व्यवस्था बहाल करनी होगी। इन चुनावों में हारने वालों के लिए कोई सबक? हां, उन्हें अपना जमीनी आधार मजबूत करना होगा; बेहतर रणनीतियों के साथ चुनाव लड़ना होगा; अन्य विपक्षी दलों के साथ गठबंधन करना होगा।

अमेरिका और चीन की बढ़ती संवाद-प्रक्रिया के साइड इफेक्ट्स

कमलेश पांडे

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच हाल में ही बढ़ती संवाद-प्रक्रिया और संभावित रणनीतिक समझौते को दुनिया बेहद गंभीरता से देख रही है, क्योंकि बदलती वैश्विक दुनियादारी और नवमहत्वाकांक्षी देशों-गुटों की मतलबी कूटनीति-अर्थनीति से अमेरिका-चीन दोनों की अंतरराष्ट्रीय बादशाहत खतरे में है। आखिर जब एक तरफ रूस और भारत अपनी दशकों पुरानी मित्रता पर अडिग हैं, तो दूसरी तरफ अमेरिका और यूरोप भी अपने पुराने सम्बन्धों को तरोताजा कर रहे हैं, जो कि अमेरिकी डीप स्टेट की बिल्कुल नई विसात है।

देखा जा रहा है कि भारत की चतुराई और रूस की दृढ़ता से अमेरिका अपने ही बुने हुए जाल में फंसकर तड़फड़ा रहा है। वहीं, रूस-चीन की समझदारी से पश्चिमी एशिया में जो अमेरिका की फजीहत हुई है, उसके बाद अब चीन के समक्ष हथियार डालने के अलावा उसके पास कोई चारा भी नहीं बचा है। चूंकि ट्रंप मेक अमेरिका ग्रेट अगेन के फार्मूले पर काम कर रहा हैं और रूस, भारत, फ्रांस, ब्राजील, जापान ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिए हैं, ऐसे में पाकिस्तान को साधकर अरब में अपनी इज्जत बचाना और चीन के दरबार में हाजिरी लगाने के अलावा उनके पास कोई चारा भी नहीं बचा हुआ था।

ऐसे में यदि अमेरिका और चीन के बीच टकराव कुछ कम होता है और नई दोस्ती या व्यावहारिक सहयोग बढ़ता है, तो इसके वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक प्रभाव दूरगामी हो सकते हैं। चूंकि दोनों देश पहले भी एक दूसरे के करीब रहे हैं, इसलिए उनके बीच कूटनीतिक प्रेम की पहल अमेरिकी की भूल सुधार रणनीति समझी जानी चाहिए और अपने उद्देश्य में ट्रंप सफल प्रतीत हो चुके हैं। हालांकि यह भविष्य के गर्त में है कि चीनी चाकरी अमेरिका कहाँ तक कर पाएगा?

अमेरिका और चीन दुनिया की दो सबसे बड़ी आर्थिक और सामरिक शक्तियाँ हैं। इनके संबंधों का असर लगभग हर

देश पर पड़ता है। ऐसे में यदि दोनों के बीच व्यापार, तकनीक, सुरक्षा और कूटनीति पर समझ बढ़ती है, तो वैश्विक तनाव कुछ हद तक कम हो सकता है। साथ ही दुनिया की अर्थव्यवस्था पर भी इसका असर लाजिमी है।

पहला, वैश्विक बाजारों में स्थिरता- अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध कम होने पर शेयर बाजारों और निवेशकों का भरोसा बढ़ सकता है। सप्लाई चेन संकट कम हो सकता है। इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, ऊर्जा और विनिर्माण क्षेत्र को राहत मिल सकती है।

दूसरा, तेल और ऊर्जा बाजार- यदि दोनों देश सहयोग करते हैं, तो वैश्विक ऊर्जा कीमतों में अनिश्चितता कम हो सकती है। मध्य पूर्व में तनाव कम कराने के लिए संयुक्त दबाव बन सकता है।

तीसरा, डॉलर बनाम युआन- चीन लंबे समय से डॉलर के वैश्विक प्रभुत्व को चुनौती देना चाहता है। ऐसे में अगर रिश्ते सुधरते हैं, तो अमेरिका कुछ आर्थिक संतुलन के साथ चीन को सीमित छूट दे सकता है, लेकिन डॉलर की केंद्रीय भूमिका तुरंत कमजोर नहीं होगी।

चतुर्थ, रूस, यूरोप और भारत पर प्रभाव- जहां तक रूस की बात है कि रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन के लिए यह स्थिति मिश्रित हो सकती है। यदि अमेरिका और चीन करीब आते हैं, तो रूस की सामरिक उपयोगिता कुछ घट सकती है। लेकिन चीन रूस को पूरी तरह छोड़ने की स्थिति में नहीं होगा, क्योंकि उसे ऊर्जा और सैन्य संतुलन की जरूरत है।

वहीं, जहां तक यूरोप की बात है तो यूरोपीय देश राहत महसूस करेंगे क्योंकि अमेरिका-चीन तनाव से वैश्विक व्यापार प्रभावित हो रहा था। लेकिन यूरोप को डर रहेगा कि कहीं अमेरिका चीन के साथ सौदेबाजी में यूरोपीय हितों को पीछे न छोड़ दे।

जहां तक भारत की बात है तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत के लिए यह स्थिति अवसर और चुनौती दोनों ला सकती है। जहां संभावित अवसर के रूप में वैश्विक व्यापार स्थिर होने से भारतीय निर्यात को लाभ मिलेगा। अमेरिका और चीन दोनों भारत को संतुलनकारी शक्ति के रूप में महत्व देते रहेंगे। भारत वैकल्पिक विनिर्माण केंद्र बन सकता है। जहां तक संभावित चुनौतियाँ की बात है तो यदि अमेरिका चीन के प्रति नरम होता है, तो भारत पर चीन-विरोधी रणनीतिक दबाव कम हो सकता है। सीमा विवादों पर चीन अधिक आत्मविश्वासी रुख भी अपना सकता है। वहीं, क्वाड जैसे समूहों की रणनीतिक धार कुछ कम हो सकती है।

जहां तक सैन्य और सामरिक प्रभाव की बात है तो ताइवान मुद्दे पर तनाव कुछ समय के लिए कम हो सकता है। दक्षिण चीन सागर में सैन्य टकराव की आशंका घट सकती है। लेकिन दोनों महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा पूरी तरह खत्म नहीं होगी। सवाल है कि क्या यह स्थायी दोस्ती होगी? संभवतः नहीं। अमेरिका और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा संरचनात्मक है- तकनीकी वर्चस्व, सैन्य प्रभुत्व, वैश्विक व्यापार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और इंडो-पैसिफिक रणनीति। इन मुद्दों पर दोनों देशों के हित टकराते रहेंगे। इसलिए यह पूर्ण मित्रता से अधिक व्यावहारिक समझौता हो सकता है।

इस पुनर्मिलन का सबसे बड़ा वैश्विक संदेश यह है कि दुनिया अब बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ रही है, जहाँ अमेरिका अकेला निर्णायक शक्ति नहीं रहेगा, बल्कि चीन भी खुलकर वैश्विक नेतृत्व चाहता है। वहीं, भारत, रूस, यूरोप, ब्राजील और खाड़ी देश भी अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र मजबूत कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में ट्रंप-जिनपिंग संवाद वैश्विक शक्ति-संतुलन को नया आकार दे सकता है।

मसूरी की जगह बांग्लादेश को भाने लगा लाहौर

नीरज कुमार दुबे

बांग्लादेश में नई सरकार आने के बाद लगा था कि मुहम्मद युनूस वाली गलतियां नहीं दोहराई जाएंगी और चीन तथा पाकिस्तान के खेमे में जाने की बजाय ढाका का झुकाव भारत की ओर ही रहेगा लेकिन ऐसा होता दिख नहीं रहा है। हम आपको बता दें कि ताजा घटनाक्रम के तहत बांग्लादेश ने अपने नौकरशाहों के प्रशिक्षण के लिए भारत के मसूरी स्थित लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी की बजाय पाकिस्तान के लाहौर स्थित सिविल सर्विसेज अकादमी को चुना है। यह कदम दक्षिण एशिया की बदलती कूटनीतिक राजनीति और बांग्लादेश की नई विदेश नीति का संकेत माना जा रहा है।

हम आपको बता दें कि करीब एक दशक तक बांग्लादेशी अधिकारियों के लिए मसूरी प्रशिक्षण का प्रमुख केंद्र रहा। वर्ष 2014 में शेख हसीना सरकार के दौरान बांग्लादेश के लोक प्रशासन मंत्रालय और भारत के राष्ट्रीय सुशासन केंद्र के बीच समझौता हुआ था। इसके बाद 2019 और 2024 में भी नए समझौते हुए। 2019 से 2024 के बीच भारत में 1019 से अधिक बांग्लादेशी सिविल सेवकों को प्रशिक्षण दिया गया, जबकि कुल मिलाकर लगभग 2500 अधिकारी भारत में प्रशिक्षित हुए। लेकिन अब पहली बार 12 बांग्लादेशी अधिकारी 4 से 21 मई तक लाहौर में प्रशिक्षण ले रहे हैं और इसका पूरा खर्च पाकिस्तान सरकार उठा रही है।

यह बदलाव ऐसे समय हुआ है जब शेख हसीना के सत्ता से बाहर होने के बाद ढाका और इस्लामाबाद के बीच रिश्ते तेजी से मजबूत हो रहे हैं। हाल ही में बांग्लादेश की विदेश राज्य मंत्री शमा ओबायद इस्लाम और पाकिस्तान के आंतरिक मंत्री सैयद मोहसिन रजा नकवी के बीच हुई बैठक में दोनों देशों ने व्यापार, खेल, संस्कृति, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और डिजिटल नवाचार जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया। दोनों पक्षों ने दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन को फिर से सक्रिय बनाने और क्षेत्रीय संपर्क मजबूत करने की आवश्यकता भी दोहराई।

विशेषज्ञों का मानना है कि बांग्लादेश अब अपनी विदेश नीति में अधिक रणनीतिक स्वतंत्रता दिखाना चाहता है। नई राजनीतिक व्यवस्था के बाद ढाका भारत पर अत्यधिक निर्भरता से बचते हुए पाकिस्तान और चीन जैसे देशों के साथ भी संतुलित संबंध बनाने की

कोशिश कर रहा है। यही कारण है कि नई सरकार भारत के साथ संबंध बनाए रखते हुए दूसरे विकल्पों की ओर भी बढ़ रही है। हालांकि बांग्लादेश और भारत दोनों यह समझते हैं कि टकराव लंबे समय तक उनके हित में नहीं है। इसी वजह से दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग, आर्थिक संपर्क और राजनयिक संवाद फिर से शुरू करने की कोशिशें भी हो रही हैं।

फिर भी दोनों देशों के बीच अविश्वास पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। शेख हसीना का भारत में रहना बांग्लादेश की राजनीति में लगातार विवाद का विषय बना हुआ है। ढाका में यह धारणा मजबूत हुई है कि भारत बांग्लादेश की आंतरिक राजनीति में जरूरत से ज्यादा प्रभाव बनाए रखना चाहता है। खासकर युवा वर्ग में राष्ट्रवाद और राजनीतिक स्वायत्तता की भावना पहले से अधिक मजबूत हुई है। भारत विरोधी भावना अब केवल वैचारिक मुद्दा नहीं रह गई, बल्कि घरेलू राजनीतिक पहचान का हिस्सा बनती जा रही है।

सीमा प्रबंधन, अवैध तस्करी, प्रवासन और जल बंटवारे जैसे पुराने विवाद भी अब तक हल नहीं हो पाए हैं। तीस्ता जल समझौता वर्षों से लंबित है और जलवायु परिवर्तन के कारण भविष्य में यह विवाद और गंभीर हो सकता है। हालांकि पश्चिम बंगाल की राजनीति में हुए बदलाव के बाद कुछ विश्लेषकों को उम्मीद है कि इस दिशा में नई पहल संभव हो सकती है।

इसके बावजूद आर्थिक संबंध दोनों देशों के रिश्तों को स्थिर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था काफी हद तक भारतीय बाजार और आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भर है, जबकि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए बांग्लादेश का भूभाग संपर्क और व्यापार के लिहाज से बेहद अहम है। यही आर्थिक परस्पर निर्भरता हर तनाव के बावजूद रिश्तों को पूरी तरह टूटने से बचाती रही है।

इसी बीच, चीन भी बांग्लादेश की विदेश नीति में तेजी से प्रभाव बढ़ा रहा है। माना जा रहा है कि प्रधानमंत्री तारिक रहमान अपनी पहली द्विपक्षीय विदेश यात्रा चीन को समर्पित कर सकते हैं। चीन पहले ही बांग्लादेश के साथ अपने संबंधों को नई ऊंचाई पर पहुंचा हुआ बता चुका है। इससे साफ संकेत मिलता है कि ढाका अब बहुध्रुवीय कूटनीति अपनाते हुए भारत, चीन और पाकिस्तान के बीच संतुलन साधने की कोशिश कर रहा है।

देखा जाये तो दक्षिण एशिया की बदलती राजनीति में बांग्लादेश का यह नया रुख केवल एक देश की विदेश नीति का बदलाव नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र में शक्ति संतुलन के नए दौर की शुरुआत माना जा रहा है। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि भारत और बांग्लादेश अपने ऐतिहासिक रिश्तों को नई राजनीतिक वास्तविकताओं के साथ किस तरह संतुलित करते हैं।

बहरहाल, विशेषज्ञों का मानना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कूटनीति का सबसे मजबूत पक्ष यह रहा है कि भारत ने तमाम राजनीतिक उतार चढ़ाव और तनाव के बावजूद बांग्लादेश के साथ संवाद और सहयोग के रास्ते कभी पूरी तरह बंद नहीं किये। चाहे ऊर्जा सहयोग हो, व्यापार, संपर्क परियोजनाएं, सुरक्षा साझेदारी या मानवीय सहायता, भारत ने हर कठिन समय में ढाका का साथ दिया है। दूसरी ओर चीन और पाकिस्तान की नीतियों को दक्षिण एशिया में अक्सर रणनीतिक हितों और अवसरवाद से प्रेरित माना जाता रहा है। चीन निवेश और बुनियादी ढांचे के जरिये प्रभाव बढ़ाने की कोशिश करता है, जबकि पाकिस्तान के साथ बांग्लादेश के रिश्तों का इतिहास भी कई संवेदनशील अध्यायों से जुड़ा रहा है। ऐसे में आने वाले समय में बांग्लादेश को यह एहसास हो सकता है कि स्थायी, भरोसेमंद और निस्वार्थ सहयोगी के रूप में भारत का महत्व सबसे अधिक है। हालांकि सवाल यह भी है कि जब तक ढाका इस वास्तविकता को पूरी तरह समझेगा, तब तक कहीं रणनीतिक और कूटनीतिक स्तर पर बहुत देर ना हो जाये।

मायावती की निष्क्रियता, क्या खत्म हो जाएगी बसपा?

दिलीप कुमार पाठक

उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक समय ऐसा था जब मायावती का नाम सुनते ही विरोधी दल अपनी रणनीति बदलने लगते थे। लेकिन आज जमीनी हकीकत पूरी तरह बदल चुकी है। देश की सियासत में यह चर्चा बहुत तेज है कि मायावती की जमीनी स्तर पर बढ़ती निष्क्रियता और पार्टी का लगातार गिरता वोट बैंक बहुजन समाज पार्टी यानी बसपा को खत्म होने की कगार पर ले आया है। नौबत यहां तक आ गई है कि बसपा से उसका राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा भी कभी भी छिन सकता है। अगर हम आंकड़ों को देखें, तो बसपा की हालत इस समय सबसे खराब दौर में है। देश और उत्तर प्रदेश के चारो सदनों को मिलाकर देखें तो पार्टी के पास अब नाममात्र के नेता बचे हैं। लोकसभा चुनाव में अकेले चुनाव लड़ने वाली बसपा का खाता तक नहीं खुला और देश के सबसे बड़े सदन में उसकी सीटें आज शून्य हैं। देश के उच्च सदन यानी राज्यसभा में बसपा का सिर्फ एक सांसद बचा है, जिनका कार्यकाल नवंबर 2026 में खत्म हो जाएगा। इसके बाद बसपा का कोई नया सांसद राज्यसभा नहीं जा पाएगा क्योंकि उत्तर प्रदेश विधानसभा में पार्टी के पास विधायक ही नहीं हैं। जिस उत्तर प्रदेश में कभी मायावती ने चार बार मुख्यमंत्री बनकर सरकार चलाई थी, आज वहां की 403 विधानसभा सीटों में से बसपा के पास केवल एक विधायक बचा है। वहीं, उत्तर प्रदेश विधान परिषद में भी बसपा की सीटें अब जीरो हो चुकी हैं। इस भारी गिरावट का सबसे बड़ा कारण मायावती की राजनीति करने का तरीका है। पिछले कुछ सालों से वे केवल प्रेस कॉन्फ्रेंस या सोशल मीडिया पर बयान जारी करने तक सीमित हो गई हैं। वे न तो जनता के मुद्दों पर सड़कों पर उतर रही हैं और न ही महंगाई, बेरोजगारी या दलित उत्पीड़न जैसे मामलों पर कोई बड़ा आंदोलन कर रही हैं। नेता की इस निष्क्रियता के कारण पार्टी के जमीनी कार्यकर्ता निराश होकर घर बैठ गए या दूसरी पार्टियों में शामिल हो गए। इसी का नतीजा है कि आम चुनाव में बसपा का कुल वोट शेयर घटकर मात्र दो प्रतिशत के आसपास रह गया। चुनाव आयोग के नियमों के अनुसार, इतने कम वोट शेयर और बिना किसी सीट के बसपा का राष्ट्रीय पार्टी का तमगा जाना लगभग तय है।मायावती के इस तरह शांत बैठने और बसपा के कमजोर होने का सीधा फायदा दूसरी पार्टियों को मिल रहा है। बसपा का जो कोर मुस्लिम और दलित वोट बैंक था, उसका एक बड़ा हिस्सा समाजवादी पार्टी

और कांग्रेस के गठबंधन की तरफ चला गया है। वहीं, गरीब और गैर-जाटव दलितों का एक बड़ा वर्ग सरकारी योजनाओं जैसे मुफ्त राशन और आवास के कारण भाजपा के साथ जुड़ गया है। इसके अलावा, युवाओं के बीच चंद्रशेखर आजाद एक नए और आक्रामक दलित नेता के रूप में उभरे हैं, जिन्होंने नगीना सीट से लोकसभा चुनाव जीतकर यह साबित कर दिया कि बसपा का वोटर अब नया विकल्प ढूंढ चुका है। जमीनी हकीकत यह भी है कि मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को राजनीति में आगे तो बढ़ाया और उन्हें अपना उत्तराधिकारी भी घोषित किया, लेकिन उनके आक्रामक भाषणों के बाद उन्हें कुछ समय के लिए किनारे कर दिया गया। नेतृत्व के इस असमंजस ने कार्यकर्ताओं को और ज्यादा भ्रमित कर दिया। जब तक पार्टी में युवाओं को खुलकर फैसले लेने की आजादी नहीं मिलेगी, तब तक नए दौर के वोटरों को जोड़ना नामुमकिन है। साफ शब्दों में कहें तो बसपा इस समय अपने अस्तित्व की सबसे कठिन लड़ाई लड़ रही है। उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव बिल्कुल नजदीक हैं। अगर मायावती ने अब भी अपनी बंद कमरों वाली रणनीति नहीं बदली, आकाश आनंद जैसे युवा नेताओं को कमान सौंपकर सड़कों पर संघर्ष शुरू नहीं किया, तो बसपा का राजनीतिक वजूद हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा। क्योंकि राजनीति में शून्य के लिए कोई जगह नहीं होती। अगर बसपा अपनी जमीन छोड़ रही है, तो लोकतंत्र का नियम है कि कोई न कोई उस खाली जगह को भरेगा ही। अब फैसला मायावती को करना है कि वे इतिहास का हिस्सा बनना चाहती हैं या भविष्य का।

गृह प्रवेश कर रहें हैं तो करें ये उपाय, जानें किस यंत्र से होगी कौन सी बाधा दूर

घर में प्रवेश करने से पहले बडे-बुजुर्ग, पूजनीय, पित्रों (इष्ट) का आशीर्वाद लें तथा भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने से सबके मन में सकारात्मक प्रभाव आता है और उनकी सकारात्मक शक्ति आपको जीवन में आगे बढने का हौसला देती है।

मकान, वस्तु शास्त्र की विधि द्वारा बनवाना जितना जरूरी है, उतना ही ज्योतिष विद्या के अनुसार गृह प्रवेश भी जरूरी है। विभिन्न ज्योतिष ग्रंथों में नक्षत्रों को ध्यान में रखकर गृहप्रवेश विधि का वर्णन किया गया है। सभी ज्योतिष शास्त्रों में गृह प्रवेश को विधि विधान द्वारा ही शुभ माना जाता है। ऐसा न करने पर कोई अनहोनी या समस्या जातक को परेशान कर सकती है।

नए मकान में प्रवेश करने से पहले रंगाई- पुताई करवाकर पानी के सभी नल, बिजली के कनेक्शन आदि की अच्छी तरह से जांच कर लेनी चाहिए। शुभ मुहूर्त में, मकान का फर्श- सुथरा करके यज्ञ, हवन, पूजन, दीप, धूप आदि द्वारा विधि- विधान से गृह प्रवेश पूजन सम्पन्न करना चाहिए। घर में प्रवेश करने से पहले बडे- बुजुर्ग, पूजनीय, पित्रों (इष्ट) का आशीर्वाद लें तथा भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने से सबके मन में सकारात्मक प्रभाव आता है और उनकी सकारात्मक शक्ति आपको जीवन में आगे बढने का हौसला देती है। रोजाना घर में फिटकरी के पानी से पोछा लगाना भी बेहद लाभकारी माना जाता है। घर में वास्तु दोष निवारक यंत्र अवश्य रखें इससे अगर घर की बनावट में किसी तरह की परेशानी होगी तो दूर होगी।

हिंदू धर्म संस्कृति में प्राचीन युग से ही वास्तु देवता की प्रसन्नता के लिए उनकी पूजा का विशिष्ट स्थान रहा है। चाहे नगर निर्माण हो या भवन निर्माण अथवा कर्मकांड के लघु एवं बृहत यज्ञानुष्ठान आदि हों, इन सभी कार्यों में सफलता में आने वाली बाधाओं के शमन के लिए वास्तुपुरुष की विधिपूर्वक पूजा की जाती है। ऐसी स्थिति में संपूर्ण वास्तुयंत्र को अपने घर में स्थापित करने से वास्तु देवता प्रसन्न होते हैं जिससे घर की सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है।

श्री गायत्री यंत्र: गायत्री यंत्र के पूजन, दर्शन से घर में सात्विक वातावरण बनता है जिससे घर के सभी सदस्यों में पवित्र भावना का विकास होता है। महामृत्युंजय यंत्र: इस यंत्र के दर्शन, पूजन से घर में दु:ख, बीमारियों से रक्षा होती है, व्यक्ति उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

श्री काली यंत्र: महाकाली यंत्र के दर्शन, पूजन से अकाल मृत्यु से रक्षा होती है। आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। श्री वास्तु महायंत्र: इस यंत्र के दर्शन, पूजन से घर में वास्तुदोष का निवारण होता है। घर की सुरक्षा बनी रहती है।

श्री केतु यंत्र: केतु यंत्र के दर्शन, पूजन से अचानक होने वाली अशुभ घटनाओं का पूर्वाभास होता है। व्यक्ति सावधानीपूर्वक विकट स्थितियों का सामना करने में सफल होता है।

श्री राहु यंत्र: इस यंत्र के दर्शन, पूजन से कार्यों में आने वाली अडचनें दूर होती हैं। सामान्य संघर्ष के बाद व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है।

श्री शनि यंत्र: शनि यंत्र के पूजन, दर्शन से हीन भावनाओं का नाश होता है। व्यक्ति स्थिरतापूर्वक कार्यक्षेत्र में सफल होता है।

श्री मंगल यंत्र: मंगल यंत्र के पूजन, दर्शन से धैर्य एवं साहस में वृद्धि होती है जिससे व्यक्ति निडर होकर कार्य करता है।

श्री कुबेर यंत्र: कुबेर यंत्र के पूजन, दर्शन से आय के स्त्रोतों में वृद्धि होती है। धन का सदुपयोग होता है।

इसीलिए इसका नाम स्कंद पुराण पडा

स्कंदपुराण का मूल रचनाकाल सातवीं शताब्दी माना जाता है, पर इसमें समय-समय पर सामग्री जुडती गई है। इसके वृहदाकार का यही कारण है। शिव-पुत्र कार्तकेय का नाम ही स्कन्द है।

पुराणों के क्रम में स्कंद पुराण का तेरहवां स्थान है। आकार की दृष्टि से सबसे बडा पुराण है। इसमें स्कंद (कार्तकेय) द्वारा शिवतत्व का वर्णन किया गया है। इसीलिए इसका नाम स्कंद पुराण पडा। इसमें तीर्थों के उपाख्यानों और उनकी पूजा-पद्धति का भी वर्णन है। 'वैष्णव खंड' में जगन्नाथपुरी की और 'काशीखंड' में काशी के समस्त देवताओं, शिवलिंगों का आविर्भाव और महात्म्य बताया गया है। 'आवन्यखंड' में उज्जैन के महाकलेश्वर का वर्णन है।

हिंदुओं के घर-घर में प्रसिद्ध 'सत्यनारायण व्रत' की कथा 'रेवाखंड' में मिलती है। तीर्थों के वर्णन के माध्यम से यह पुराण पूरे देश का भौगोलिक वर्णन प्रस्तुत करता है। स्कंदपुराण का मूल रचनाकाल सातवीं शताब्दी माना जाता है, पर इसमें समय-समय पर सामग्री जुडती गई है। इसके वृहदाकार का यही कारण है। शिव-पुत्र कार्तकेय का नाम ही स्कन्द है। स्कन्द का अर्थ होता है- क्षरण अर्थात् विनाश। भगवान शिव संहार के देवता हैं। उनका पुत्र कार्तिकेय संहारक शस्त्र अथवा शक्ति के रूप में जाना जाता है। यह छह संहिताओं-सनत्कुमार संहिता, सूत संहिता, शंकर संहिता, वैष्णव संहिता, ब्रहम संहिता तथा सौर संहिता में विभाजित है।

'स्कन्द पुराण' में इक्यासी हजार श्लोक हैं। इस पुराण का प्रमुख विषय भारत के शैव और वैष्णव तीर्थों के माहात्म्य का वर्णन करना है। उन्हीं तीर्थों का वर्णन करते समय प्रसंगवश पौराणिक कथाएं भी दी गई हैं। बीच-बीच में अध्यात्म विषयक प्रकरण भी आ गए हैं। तुलसीदास के 'रामचरित मानस' में इस पुराण का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है।

'स्कन्द पुराण' कहता है कि ममता-मोह त्याग कर निर्मल चित्त से मनुष्य को भगवान के चरणों में मन लगाना चाहिए। तभी वह कर्म के बन्धनों से मुक्त हो सकता है। मन के शान्त हो जाने पर ही व्यक्ति योगी हो पाता है। जो व्यक्ति राग-द्वेष छोडकर क्रोध और लोभ से दूर रहता है, सभी पर समान दृष्टि रखता है तथा शौच-सदाचार से युक्त रहता है; वही सच्चा योगी है।

'स्कन्द पुराण' में जितने तीर्थों का उल्लेख है, उतने तीर्थ आज देखने में नहीं आते। उनमें से अधिकांश तीर्थों का तो नामोनिशान तक मिट गया है और कुछ तीर्थ खण्डहरों में परिवर्तित हो चुके हैं। इस कारण समस्त तीर्थों का सही-सही पता लगाना अत्यन्त कठिन है। किन्तु जिन तीर्थों का माहात्म्य प्राचीन काल से चला आ रहा है, उनका अस्तित्व आज भी देखा जा सकता है।

यह पूजा और मंत्र आपके ज्ञान, बुद्धि और भाग्य को बेहतर बनाएंगे

गुरुवार के दिन नवग्रह या बृहस्पति मंदिर में गुरु बृहस्पति की प्रतिमा को पंचामृत स्नान या केसर मिले दूध से स्नान के बाद पूजा गंध, अक्षत, पीले फूल चढाएं, पीले पकवानों का भोग लगाएं। बाद पीले आसन पर बैठ नीचे लिख बेहद आसान बृहस्पति मंत्र का यथाशक्ति या कम से कम 108 बार सौभाग्य कामना से जप करें व आरती करें-

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।
ॐ ऐं श्रीं बृहस्पतये नमः।
ॐ गुं गुरवे नमः।
ॐ बृं बृहस्पतये नमः।
ॐ क्लीं बृहस्पतये नमः।

हिन्दू धर्म शास्त्रों के मुताबिक गुरु बृहस्पति ज्ञान, बुद्धि और भाग्य को नियत करने वाले देवता माने गए हैं। साथ ही सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए भी गुरु पूजा श्रेष्ठ उपाय है। इन इच्छाओं को जल्द पूरा करने के लिये गुरुवार के दिन देव गुरु बृहस्पति की पूजा का विशेष महत्व बताया गया है। गुरुवार के दिन इस बेहद आसान गुरु बृहस्पति मंत्र से पूजा बुद्धि, ज्ञान और वैवाहिक बाधाओं को दूर कर किस्मत चमकाने वाली मानी गई है। इसलिए जानिए, गुरु पूजा की सरल विधि व मंत्र -

बृं बृहस्पतये नमः।

देवगुरु बृहस्पति के तंत्रोक्त मंत्र ना सिर्फ धन और वैभव की दृष्टि से चमत्कारी है बल्कि तुरंत असर करने वाले हैं। जरूरत है इन्हें एक साथ निरंतर जपने की। इन चमत्कारी पांचों मंत्रों की जप संख्या 19 हजार है। आप किसी भी एक गुरु मंत्र का गुरुवार के दिन जप कर सकते हैं।

सूर्य के बाद सबसे विशाल ग्रह भी बृहस्पति ही है। देवपूज्य बृहस्पति या गुरु दार्शनिक, आध्यात्मिक ज्ञान को निर्देशित करने वाला उत्तम ग्रह माना गया है। देवगुरु बृहस्पति के तंत्रोक्त मंत्र ना सिर्फ धन और वैभव की दृष्टि से चमत्कारी है बल्कि तुरंत असर करने वाले हैं। जरूरत है इन्हें एक साथ निरंतर जपने की।

जब पार्वती ने दिया शिवजी को श्राप

भगवान शंकर ने माता पार्वती को अपने साथ द्युत क्रीडा खेलने का प्रस्ताव दिया। इस खेल में भगवान शिव सब कुछ पार्वतीजी के हाथों हार जाते हैं। द्युत क्रीडा में सब कुछ हारने के बाद भगवान शिव पत्तों के वस्त्र पहनकर गंगा के तट पर चले जाते हैं।

द्युत क्रीडा (जुआ) ने केवल मनुष्यों को ही बर्बाद नहीं किया है बल्कि इसके चपेट से भगवान भी नहीं बच सके। महाभारत काल में पांडवों को तथा पार्वती के साथ भगवान शिवजी को भी इस खेल में सब कुछ गवाना पडा था। शायद इन्हीं देवताओं की गलती से सबक लेकर बडे-बुजर्गों ने हम सबको जुआ को खेल नहीं एक बुराई के रूप में बताया है। जुआ के कारण उस काल से लेकर इस काल तक कई परिवार बर्बाद हुए हैं। इसे कभी भी एक खेल के रूप में नहीं देखा गया क्योंकि इसके पीछे बिना मेहनत के लाभ कमाना और षडयंत्र जैसे कृत शामिल होता है। जुआ के कारण भगवान शंकर को सबकुछ हारना पडा था।

कहा जाता है कि एक बार भगवान शंकर ने माता पार्वती को अपने साथ द्युत क्रीडा खेलने का प्रस्ताव दिया। इस खेल में भगवान शिव सब कुछ पार्वतीजी के हाथों हार जाते हैं। द्युत क्रीडा में सब कुछ हारने के बाद भगवान शिव पत्तों के वस्त्र पहनकर गंगा के तट पर चले जाते हैं।

यह देख पार्वती बहुत चिंतित हो गई । माता पार्वती ने गणोश जी को पूरी बात बतायी। माता की व्यथा सुनकर गणेश जी स्वयं जुआ खेलने शंकर भगवान के पास पहुंचते हैं। गणेश जी की लीला देखिए वह शिवजी से द्युत क्रीडा जीत जाते हैं। यह समाचार माता को सुनाते हैं लेकिन माता पार्वती खुश नहीं होती है। वह उन्हें अपने साथ शिवजी को लाने के लिए भी कहती हैं। गणेशजी भोलेबाबा की तलाश में चले जाते हैं।

उधर पार्वती से नाराज भोलेबाबा लौटने से इंकार कर देते है। भोलेनाथ की मदद के लिए उनके परम भक्त रावण ने बिल्ली का रूप धारण कर गणेश जी के वाहन मूषक भगा देते हैं। अब भगवान विष्णु ने भोलेनाथ की इच्छा से पासा का रूप धारण कर लिया। शंकरजी ने गणेशजी से कहा कि यदि पार्वती फिर से मेरे साथ जुआ खेलने के लिए राजी होती है तो मैं चलने के लिए तैयार हूँ।

शिवजी के प्रस्ताव पर पार्वती हस पडी और कहा कि अब जुआ खेलने के लिए आपके पास है क्या यह सुनकर नारद जी ने अपनी वीणा आदि सामग्री शिवजी को दे दिया। चूकी पासा के रूप में भगवान विष्णु थे इसलिए हर बाजी शिवजी जीतने लगे। परन्तु इस खेल की चाल गणेश जी समझ गए और माता पार्वती को बता दिया। यह सुनकर पार्वती जी को गुस्सा आ गया। यह देख रावण ने माता पार्वती को समझाने का प्रयत्न किया पर उनका गुस्सा शांत नहीं हुआ।

क्रोध में माता ने भोलेनाथ को श्राप दिया कि गंगा की धारा का बोझ उनके माथे पर हमेशा बना रहेगा। पार्वती जी ने नारद को भी श्राप दिया कि वे कभी एक स्थान पर नहीं टिक सकेंगे। उन्होंने भगवान विष्णु को श्राप दिया कि रावण तुम्हारा शत्रु होगा और रावण का विनाश विष्णु के हाथों होगा तथा कार्तिकेय को माता पार्वती ने कहा कि वह हमेशा बालक के रूप में ही रहेंगे।

हिंदू धर्म में महिलाएं क्यूं नहीं फोडती नारियल

यदि भगवान को नारियल चढाया जाए तो, धन संबंधी समस्याएं दूर हो जाती हैं। आपने अक्सर मंदिरों में देखा होगा कि नारियल को या तो पंडित जी या फिर कोई पुरुष ही फोडता है।

पूजा के कार्य में नारियल का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी देवी देवता की पूजा नारियल के बिना अधूरी मानी जाती है। यदि भगवान को नारियल चढाया जाए तो, धन संबंधी समस्याएं दूर हो जाती हैं।

आपने अक्सर मंदिरों में देखा होगा कि नारियल को या तो पंडित जी या फिर कोई पुरुष ही फोडता है। महिलाओं को नारियल फोडने का अधिकार हिंदू धर्म में नहीं दिया गया है। क्या आपके मन में कभी ऐसा प्रश्न उठा है कि जब हम महिलाओं को लक्ष्मी का दर्जा देते हैं, तो उनका नारियल फोडने से अधिकार क्यूं छीन लेते हैं। इसके पीछे भी राज है, आइये जानते हैं इसके बारे मे नारियल के पीछे भी एक कथा छुपी हुई है। वह यह है कि ब्रम्हा ऋषि विश्वामित्र ने विश्व का निर्माण करने से पहले नारियल का निर्माण किया था। यह मानव का प्रतिरूप माना गया था। नारियल को बीज रूप माना गया है, जो प्रजनन क्षमता से जुडा है।

स्त्रियों बीज रूप से ही शिशु को जन्म देती है और इसलिए नारी के लिए बीज रूपी नारियल को फोडना अशुभ माना गया है। देवी-देवताओं को श्रीफल चढाने के बाद पुरुष ही इसे फोडते हैं। हांलाकि इसके बारे में ना तो कहीं लिखा गया है और ना ही देवी-देवताओं ने इससे जुडे निर्देश कभी दिये हैं। यह सब सामाजिक मान्यताओं और विश्वास के चलते बरसों से हमारे रीति-रिवाज का हिस्सा बना हुआ है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

वीडी सतीशन ने केरल मुख्यमंत्री पद की शपथ ली

तिरुवनंतपुरम। केरल में वीडी सतीशन ने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली और राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने यहां कांग्रेस विधायक दल के नेता को पद की शपथ दिलाई। सतीशन के शपथ के बाद उन्हें राजनेताओं की तरफ से बधाईयां भी दी गई। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडी सतीशन को केरलम के मुख्यमंत्री बनने पर बधाई दी। एक्स पर पोस्ट में पीएम मोदी ने कहा कि वीडी सतीशान जी को केरल के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने पर हार्दिक बधाई। केंद्र सरकार नवगठित केरल सरकार को जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने में हर संभव सहयोग का आश्वासन देती है। बता दें कि सतीशन ने ईश्वर के नाम पर शपथ ली। सतीशन के अलावा उनके 20 सदस्यीय मंत्रिमंडल के अन्य सदस्यों को भी यहां आयोजित भव्य समारोह में शपथ दिलाई गई। शपथ लेने वाले 20 सदस्यीय मंत्रिमंडल में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रमेश चेन्निथला, के मुरलीधरन, ए पी अनिल कुमार और केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रमुख सनी जोसेफ शामिल हैं।

अब न्यायमूर्ति मनोज जैन सुनेंगे अरविंद केजरीवाल का मामला

नईदिल्ली। दिल्ली आबकारी नीति मामले में आम आदमी पार्टी प्रमुख अरविंद केजरीवाल से जुड़े मामले में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम सामने आया है। अब इस मामले की सुनवाई दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति मनोज जैन करेंगे। यह बदलाव सीबीआई द्वारा केजरीवाल और अन्य आरोपियों को निचली अदालत द्वारा बरी किए जाने के फैसले को चुनौती देने के बाद हुआ है। इससे पहले, इस मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा कर रही थीं। अलग-अलग घटनाओं के संबंध में केजरीवाल और कई अन्य लोगों के खिलाफ आपराधिक अवमानना की कार्यवाही शुरू करने के बाद उन्होंने खुद को इस मामले से अलग कर लिया। उनके अलग होने के बाद, मामले को पुन: सौंपा गया और मंगलवार (19 मई) को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया। सीबीआई ने उस निचली अदालत के आदेश को चुनौती दी है जिसमें केजरीवाल और अन्य आरोपियों को आबकारी नीति मामले में बरी कर दिया गया था।

आप नेता दीपक सिंगला मनी लॉन्ड्रिंग केस में गिरफ्तार

नईदिल्ली। दिल्ली में आप से जुड़े परिसरों में तलाशी अभियान के कुछ घंटों बाद ही ईडी ने आप नेता दीपक सिंगला को गिरफ्तार कर लिया है। सूत्रों के अनुसार, दिल्ली और गोवा में छापेमारी की जा रही है। एक सूत्र ने बताया कि उत्तरी गोवा के एक फ्लैट में तलाशी ली जा रही है, जहां आप की संगठनात्मक टीम के कुछ सदस्य रहते हैं। एक्स पर एक पोस्ट में दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री और आप की गोवा राज्य प्रभारी आतिशी ने कहा कि गोवा में आम आदमी पार्टी की लोकप्रियता बढ़ने के साथ ही, भाजपा के वफादार सिपाही, ईडी को भी यहाँ भेज दिया गया है! आज सुबह से ही आप गोवा के सह-प्रभारी दीपक सिंगला के आवास के साथ-साथ गोवा में कुछ स्वयंसेवकों के घरों पर भी ईडी की छापेमारी जारी है। यह न केवल हमारे स्वयंसेवकों को डराने का प्रयास है, बल्कि भाजपा के लिए हमारे संगठन से संबंधित सभी डेटा प्राप्त करने का भी प्रयास है। सिंगला ने 2025 और 2020 में आम आदमी पार्टी के टिकट पर विश्वास नगर निर्वाचन क्षेत्र से दिल्ली विधानसभा चुनाव लड़ा था।

लंबे इंतजार के बाद महाराष्ट्र विधान परिषद चुनाव का ऐलान

नईदिल्ली। भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने सोमवार (18 मई) को महाराष्ट्र विधान परिषद की 16 सीटों के लिए चुनाव की घोषणा की। मतदान 18 जून को होगा और मतगणना 22 जून को होगी। आयोग ने बताया कि महाराष्ट्र के 16 स्थानीय निकाय निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले सदस्यों का कार्यकाल 2022 और 2025 के बीच अलग-अलग समय पर समाप्त हो गया था। हालांकि, स्थानीय निकायों के कामकाज से संबंधित अनिवार्य मानदंडों की पूर्ति न होने और मतदाताओं की उपलब्धता न होने के कारण पहले चुनाव नहीं कराए जा सके। चुनाव कार्यक्रम के अनुसार, चुनाव की आधिकारिक अधिसूचना 25 मई, 2026 को जारी की जाएगी। नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि 1 जून है, जबकि नामांकन पत्रों की जांच 2 जून को होगी। उम्मीदवार 4 जून तक अपना नामांकन वापस ले सकते हैं। सभी 16 सीटों के लिए मतदान 18 जून को सुबह 8 बजे से शाम 4 बजे तक होगा। पूरी चुनाव प्रक्रिया 25 जून तक पूरी होने की उम्मीद है।

एआईएडीएमके के वरिष्ठ नेता सेम्मलाई ने पार्टी से दिया इस्तीफा

चेन्नई। एआईएडीएमके के वरिष्ठ नेता एस. सेम्मलाई ने सोमवार को पार्टी से अपने इस्तीफ़े का ऐलान किया। उन्होंने पार्टी के भीतर बढ़ती अंदरूनी कलह और तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जे. जयललिता के निधन के बाद वरिष्ठ नेताओं को मौकों की कमी पर निराशा ज़ाहिर की। एडप्पादी के. पलानीस्वामी को लिखे अपने इस्तीफ़ा पत्र में सेम्मलाई ने कहा कि चुनावों के बाद से एआईएडीएमके के भीतर जो घटनाक्रम हुए हैं, उनसे उन्हें गहरा दुख पहुँचा है। पत्र में लिखा चुनावों के बाद एआईएडीएमके में जो घटनाएँ हो रही हैं, उनसे मुझे बहुत ज़्यादा मानसिक पीड़ा हुई है। क्या यही उस आंदोलन की नियति है, जिसे सुनहरे दिल वाले क्रांतिकारी नेता एम.जी. रामचंद्रन ने शुरू किया था और जिसे क्रांतिकारी नेता अम्मा जे. जयललिता ने सँवारा था? कपूर तो घुल सकता है, लेकिन क्या कोई पार्टी भी घुल सकती है? यह बात दुख देती है, सचमुच दिल को दुख पहुँचाती है। मैं बड़े दुख के साथ पार्टी नेतृत्व को सूचित करता हूँ कि मैं अपने मौजूदा पद से हट रहा हूँ और साथ ही पार्टी से भी इस्तीफ़ा दे रहा हूँ।

दिल्ली में 'मेट्रो मंडे' की शुरुआत

पब्लिक ट्रांसपोर्ट से फ्यूल बचाएं : सीएम रेखा गुप्ता

नईदिल्ली। पेट्रोल-डीजल की बचत के लिए दिल्ली सरकार की ओर से शुरू किए गए मेरा भारत मेरा योगदान अभियान के तहत मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों और वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों ने सोमवार को कार्यालय जाने के लिए मेट्रो का इस्तेमाल किया। गुप्ता राज निवास मार्ग पर स्थित अपने सरकारी आवास 'जन सेवा सदन' के पास कश्मीरी गेट स्टेशन से वायलेट लाइन की ट्रेन में सवार हुईं और दिल्ली सचिवालय के पास आईटीओ स्टेशन पहुंची। इस दौरान उनके साथ सामाजिक कल्याण मंत्री रविंद्र सिंह इंद्रराज थे।

उन्होंने आईटीओ मेट्रो स्टेशन पर पत्रकारों से कहा, मैं दिल्ली के सभी निवासियों से सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने का आग्रह करती हूं जिससे न केवल ईंधन की बचत होगी बल्कि प्रदूषण और यातायात जाम से निपटने में भी मदद मिलेगी। दिल्ली सरकार सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करने और अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी की समस्याओं को दूर करने के लिए काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा, 'मेट्रो मंडे' के अंतर्गत जो आह्वान किया गया था, उसके तहत मैं, मेरे सभी साथी मंत्री, विधायक और अधिकारियों ने प्रयास किया है कि आज मेट्रो या सार्वजनिक परिवहन का अधिक से अधिक उपयोग किया जाए।

इसी क्रम में आज हम भी मेट्रो से यहां पहुंचे हैं। यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि दिल्ली के बहुत सारे लोगों ने भी आज मेट्रो के माध्यम से यात्रा करने का निर्णय लिया है। दिल्ली सरकार ने पिछले हफ्ते मेरा भारत मेरा योगदान अभियान का ऐलान करते हुए कहा था कि हर सोमवार को मंत्री व अधिकारी 'मेट्रो मंडे' मनाएंगे और दफ्तर आने जाने के लिए मेट्रो का इस्तेमाल करेंगे। उनके अलावा मंत्री आशीष सूद, मनजिंदर सिंह सिरसा, कपिल मिश्रा और पंकज सिंह ने भी अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए मेट्रो का इस्तेमाल किया। परिवहन मंत्री पंकज सिंह ने मेट्रो मंडे के तहत दिल्ली मेट्रो से रामकृष्ण आश्रम मार्ग स्टेशन तक यात्रा की।

पर्यावरण मंत्री सिरसा ने भी दिल्ली सचिवालय पहुंचने के लिए मेट्रो से यात्रा की। पश्चिम एशिया में अनिश्चितताओं के बीच पेट्रोलियम उत्पादों की बचत के लिए राष्ट्रव्यापी प्रयासों के तहत दिल्ली सरकार ने अपने कर्मचारियों के लिए हफ्ते में दो दिन 'वर्क-फ्रॉम-होम', 'नो कार डे', ऑनलाइन बैठकें और सरकारी वाहनों के कम उपयोग जैसे उपायों की भी घोषणा की है।

मोदी सरकार में दूरदर्शिता की कमी

चुनाव तक सरकार ने सब कुछ छिपाकर रखा: खरगे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार को केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार में दूरदृष्टि की कमी है और उन्होंने विधानसभा चुनावों तक देश की आर्थिक स्थिति और बढ़ती महंगाई को जनता से छिपाकर रखा गया। खरगे की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब सरकार ने रविवार को सीएनजी की कीमतों में फिर से बढ़ोतरी की। पिछले एक सप्ताह में यह दूसरी बार है जब सीएनजी महंगी हुई है।

इससे पहले शुक्रवार को पेट्रोल और डीजल के दाम में 3 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी की गई थी। ईरान युद्ध के बाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आने से सरकारी तेल कंपनियों पर भारी दबाव पड़ रहा था। खरगे ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा पोस्ट में कहा, अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चुनाव से पहले पेट्रोल, डीजल और दूसरी चीजों के दाम बढ़ाते, तो उन्हें भारी राजनीतिक नुकसान उठाना पड़ता।

उन्होंने आरोप लगाया, मोदी सरकार ने चुनाव खत्म होने तक देश से सब कुछ छिपाकर रखा, लेकिन जैसे ही चुनाव खत्म हुए, हर चीज के दाम बढ़ा दिए गए। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, भाजपा सरकार और मोदी में दूरदृष्टि की कमी है, इसलिए उन्हें पहले से बढ़ती महंगाई का अंदाजा नहीं था। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस इस मुद्दे को जोरदार तरीके से उठाएगी क्योंकि भाजपा सरकार की नीतियों के कारण महंगाई लगातार बढ़ रही है। खरगे ने कहा, %देश के गरीब लोग अपनी जरूरत की जरूरी चीजें तक नहीं खरीद पा रहे हैं।

शुक्रवार को सरकार ने पेट्रोल और डीजल की कीमतों में 3 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी करने का एलान किया है। चार साल से भी ज्यादा समय में यह पहली बार है जब पेट्रोल-डीजल की कीमतों में इजाफा हुआ है। पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष के कारण वैश्विक स्तर कच्चे तेल की कीमतों में हुई भारी वृद्धि हुई है, जिसके चलते दुनियाभर में तेल की कीमतें बढ़ी हैं। वैश्विक स्तर पर तेल की कीमतें बढ़ने से तेल कंपनियों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। भारत में तेल की कीमतों में यह बढ़ोतरी असम, केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव खत्म होने के 16 दिन बाद हुई है। जिसे लेकर विपक्ष सरकार पर निशाना साध रहा है।

पश्चिम बंगाल में अब योगी मॉडल की गूंज

मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने लगाया पहला जनता दरबार

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने सोमवार, 18 मई को पदभार ग्रहण करने के बाद अपना पहला जनता दरबार आयोजित किया, जिसमें उन्होंने यहां भाजपा कार्यालय में लोगों की मांगों और शिकायतों को सुना। 9 मई को राज्य के पहले भाजपा मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने वाले अधिकारी ने नियमित रूप से जनता दरबार आयोजित करने का निर्णय लिया है, एक पार्टी नेता ने बताया। सॉल्ट लेक क्षेत्र स्थित भाजपा कार्यालय में मुख्यमंत्री के साथ हुई बातचीत में छात्रों सहित कई लोगों ने भाग लिया।

अधिकारी ने पहले कहा था कि बंगाली संस्कृति वैश्विक स्तर पर फिर से प्रमुखता हासिल करेगी। उन्होंने दावा किया कि पश्चिम बंगाल की जनता ने राज्य को उस शासन से मुक्त कर दिया है जिसने उसकी सांस्कृतिक पहचान को दबा रखा था। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर उन्होंने लिखा कि विश्व कवि रवींद्रनाथ टैगोर और बंगाल पुनर्जागरण के दौरान अन्य महान सपूतों के योगदान के कारण विश्व स्तर पर प्रशंसित गौरवशाली बंगाली संस्कृति एक बार फिर अग्रणी होगी, क्योंकि पश्चिम बंगाल की जनता ने राज्य को उस शासन से मुक्त कर दिया है जिसने जानबूझकर बंगाली संस्कृति का गला घोंटा और विदेशी एवं प्रतिगामी संस्कृति और परंपरा को जबरदस्ती थोपने की कोशिश की। उनका यह बयान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उस पोस्ट के जवाब में था जिसमें उन्होंने स्वीडन की पांच देशों की यात्रा के दौरान वहां बंगाली संस्कृति की उपस्थिति को उजागर किया था।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ राज्य में नियमित रूप से जनता दरबार आयोजित करते हैं, वहीं बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी अपने कार्यकाल के दौरान ऐसे जन दरबार आयोजित किए थे। इस बीच, पश्चिम बंगाल भाजपा ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि राज्य की डबल इंजन सरकार ने सत्ता संभालने के पहले सप्ताह (9 मई से 16 मई तक) में कई महत्वपूर्ण निर्णय और कार्रवाई की हैं। इसमें कहा गया है कि पश्चिम बंगाल में टीएमसी के नेतृत्व में 15 वर्षों में जो हासिल नहीं हो सका, डबल इंजन सरकार ने अपने पहले ही सप्ताह में उसे दिखाना शुरू कर दिया है। यही है नया पश्चिम बंगाल और वास्तविक शासन की गति।

8 मई को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आधिकारिक तौर पर अधिकारी को पश्चिम बंगाल में भाजपा विधायक दल का नेता घोषित किया। अगले दिन, अधिकारी ने राज्यपाल आरएन रवि से मुलाकात कर सरकार बनाने का दावा पेश किया। 9 मई को उन्होंने पश्चिम बंगाल के नौवें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। अधिकारी ने नंदीग्राम और भाबनीपुर दोनों सीटों से चुनाव लड़ा और भाबनीपुर में निवर्तमान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को 15,000 से अधिक वोटों से हराया, जो राज्य में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम था। शपथ ग्रहण समारोह कोलकाता में आयोजित किया गया और राज्यपाल आरएन रवि ने उन्हें शपथ दिलाई। इस समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता उपस्थित थे।

खेल
प्रमुख समाचार

ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए महिला हॉकी टीम का ऐलान

नईदिल्ली। हॉकी इंडिया ने 26 से 30 मई तक पर्थ में खेले जाने वाली चार मैचों की सीरीज के लिए भारतीय महिला हॉकी टीम की घोषणा कर दी है। यह मुकाबले 26, 27, 29 और 30 मई को खेले जाएंगे। भारतीय टीम का यह दौरा जून में ऑकलैंड में होने वाले एफआईएच हॉकी महिला नेशंस कप 2025-26 की तैयारी के लिहाज से बेहद अहम माना जा रहा है।

टीम की कमान अनुभवी मिडफील्डर सलीमा टेटे को सौंपी गई है। सलीमा ने भारत को 2022 कॉमनवेल्थ गेम्स और एशियन गेम्स में कांस्य पदक दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। टीम में सविता, सुशीला चानू, लालरेमसियामी और नवनीत कौर जैसी अनुभवी खिलाड़ियों के साथ कई युवा चेहरों को भी मौका दिया गया है।

ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए चयनकर्ताओं ने कई युवा खिलाड़ियों पर भरोसा जताया है। सोनम, हिना बानो और लालथंतलुआंगी जैसी युवा प्रतिभाओं को टीम में शामिल किया गया है। डिफेंस में शिल्पी डबास और लालथंतलुआंगी को पहली बार सीनियर भारतीय टीम में जगह मिली है। वहीं दीपिका सोरेंग और सोनम अभी अपने सीनियर अंतरराष्ट्रीय डेब्यू का इंतजार कर रही हैं।

गोलकीपिंग विभाग में अनुभवी सविता और बीचू देवी खारीबाम टीम की जिम्मेदारी संभालेंगी। वहीं डिफेंस में निक्की प्रधान, इशिका चौधरी, सुशीला चानू और ज्योति जैसे खिलाड़ियों पर नजर रहेगी। फॉरवर्ड लाइन की अगुवाई नवनीत कौर करेंगी। उनके साथ बलजीत कौर, दीपिका, अन्नू, इशिका और हिना बानो जैसी खिलाड़ी शामिल हैं। टीम को उम्मीद होगी कि नवनीत अपनी शानदार गोल स्कोरिंग फॉर्म जारी रखेंगी। मुख्य कोच शॉर्ड मारिन ने टीम चयन को लेकर कहा कि स्क्वाड में अनुभव और युवा खिलाड़ियों का अच्छा संतुलन रखा गया है।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 1100 अंक उछला निफ्टी 23600 के पार बंद

मुंबई। भारतीय शेयर बाजार ने आज उतार-चढ़ाव भरे कारोबार के बाद मजबूती के साथ दिन का अंत किया। दिन के दौरान भारी गिरावट देखने के बाद बाजार ने निचले स्तर से शानदार रिकवरी की और अंत में हल्की बढ़त के साथ बंद हुआ। बीएसई सेंसेक्स दिन के निचले स्तर से करीब 1,135 अंक की रिकवरी करते हुए 75,315.04 पर बंद हुआ, जो 77.05 अंकों की मामूली बढ़त है। वहीं एनएसई निफ्टी 50 भी 23,649.95 पर बंद हुआ, जिसमें सिर्फ 6.45 अंकों की हल्की बढ़त दर्ज की गई। आज के कारोबार में आईटी सेक्टर ने बाजार को मजबूती देने में अहम भूमिका निभाई। निफ्टी आईटी इंडेक्स 2 प्रतिशत से ज्यादा चढ़ा और पूरे बाजार में सबसे मजबूत सेक्टर साबित हुआ। टेक महिंद्रा, इंफोसिस और भारती एयरटेल जैसे शेयरों में अच्छी खरीदारी देखने को मिली, जिससे बाजार की गिरावट सीमित रही।

चंडीगढ़ में टू-व्हीलर को 500 रु. का ही मिलेगा पेट्रोल-डीजल

चंडीगढ़। चंडीगढ़ में ईंधन की सप्लाई प्रभावित होने के बाद प्रशासन ने शहर के सभी पेट्रोल पंपों पर अस्थायी नियम लागू कर दिए हैं। स्थानीय आपूर्ति में आ रही दिक्कतों के कारण केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासन ने शहर के पेट्रोल पंपों पर अस्थायी रूप से पेट्रोल-डीजल की राशनिंग लागू कर दी है। प्रशासन के निर्देशों के अनुसार पेट्रोल पंपों पर ग्राहकों को सीमित मात्रा में ही ईंधन दिया जा रहा है, ताकि सभी स्टेशनों पर पर्याप्त स्टॉक बनाये रखा जा सके। प्रशासन की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक, टू-व्हीलर वाहनों के लिए प्रति ट्रांज़ैक्शन अधिकतम 500 रुपये और फोर-व्हीलर वाहनों के लिए 1,500 रुपये तक का ईंधन दिया जाएगा। यह व्यवस्था स्थिति सामान्य होने तक लागू रहेगी। वर्तमान दरों के अनुसार शहर में पेट्रोल 97.27 रुपये प्रति लीटर और डीज़ल 85.25 रुपये प्रति लीटर बिक रहा है।

तेल कंपनियों को रोजाना 1,380 करोड़ रुपए का नुकसान

नईदिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल के बीच भारत की तेल कंपनियों पर भारी वित्तीय दबाव बढ़ गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पेट्रोल, डीजल और एलपीजी मिलाकर सरकारी तेल कंपनियों को रोजाना करीब 1,380 करोड़ रुपए का नुकसान हो रहा है। एनालिस्ट्स का कहना है कि अगर यही स्थिति बनी रहती है तो पेट्रोल-डीजल की कीमतों में आगे 25 रुपए प्रति लीटर तक की बढ़ोतरी की आशंका जताई जा रही है। ब्रेंट क्रूड 2% से अधिक बढ़कर 111.5 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। ईरान युद्ध शुरू होने के बाद से कच्चा तेल करीब 50त्न महंगा हो चुका है, जिससे वैश्विक बाजारों में अस्थिरता बढ़ गई है। नोमुरा के विश्लेषक विनीत बांका के अनुसार, मौजूदा हालात में कंपनियों की बैलेंस शीट पर भारी दबाव है और लंबे समय तक नुकसान जारी रहा तो स्थिति और गंभीर हो सकती है।

भूटान में स्वच्छ ऊर्जा क्षमता के लिए टाटा पावर-डीजीपीसी के बीच समझौता

नई दिल्ली। टाटा पावर ने भूटान में 5,000 मेगावाट स्वच्छ ऊर्जा क्षमता विकसित करने के लिए प्रशिक्षण ढांचा तैयार करने हेतु ड्रुक ग्रीन पावर कॉरपोरेशन (डीजीपीसी) के साथ एक प्रारंभिक समझौता किया है। कंपनी ने सोमवार को बयान में कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम टाटा पावर स्किल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (टीपीएसडीआई) के माध्यम से संचालित किए जाएंगे। टाटा पावर के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एवं प्रबंध निदेशक प्रवीर सिन्हा ने कहा, डीजीपीसी के साथ यह साझेदारी भूटान के बढ़ते स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र के लिए भविष्य के अनुरूप प्रतिभा परिवेश तैयार करने की हमारी साझा प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस समझौता ज्ञापन पर प्रवीर सिन्हा और दाशो छेवांग रिनजिन ने हस्ताक्षर किए हैं।

छुपे और सधे कदमों से आ रही है महंगाई

मनोज कुमार अग्रवाल

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार (फॉरेक्स) उछलकर 696.988 अरब (लगभग रु 58.5 लाख करोड़) के स्तर पर पहुंच गया है। हाल ही में, वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारतीय रिजर्व बैंक के हस्तक्षेप और विदेशी मुद्रा की कमी के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आम जनता से ईंधन बचाने और सोना कम खरीदने की अपील की थी।प्रधानमंत्री की इस आर्थिक देशभक्ति वाली अपील के बाद से सोने के आयात और ईंधन की खपत में कमी दर्ज की गई, जिसने भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा (लगभग 37.8 अरब डॉलर तक) बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 8 मई को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार में 6.295 अरब डॉलर का शानदार उछाल आया।इस बढ़ोतरी के साथ देश का कुल विदेशी मुद्रा भंडार 696.988 अरब डॉलर तक पहुंच गया है।

आपको बता दें कि सरकार की सारी कोशिशें है कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। सरकार को पता है कि मुसीबत सिर उठाए सामने खड़ी है लेकिन आम जनता का मनोबल और विश्वास भी बना रहे कि सरकार आपदा में ढाल बन कर खड़को है लेकिन जब बात हाथ से निकल रही है तो थोड़ा भार आम जनता को भी डालना मजबूरी है पैट्रोल डीजल के दाम में वृद्धि सोने पर आयात कर बढाना इसी दिशा में कदम है तमाम कोशिशें विदेशी मुद्रा भंडार को बढाने ताकि रूपये की अंतरराष्ट्रीय स्थिरता बने और महंगाई को नियंत्रित किया जा सके दरअसल यह केवल आंकड़ों का विषय नहीं होती, यह सीधे आम आदमी की रसोई, यात्रा, जेब और जीवन की चिंता से जुड़ी होती है। जब पेट्रोल-डीजल महंगे होते हैं, रसोई गैस का बोश बढ़ता है, दूध के दाम चढ़ते हैं और

रोजमर्रा की चीजों की कीमतें ऊपर जाने लगती हैं, तो इसका असर सिर्फ बाजार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि हर घर के बजट को हिला देता है। आज देश एक बार फिर ऐसे ही दौर से गुजरता दिखाई दे रहा है, जहां महंगाई की चौतरफा मार ने आम लोगों की चिंता बढ़ा दी है। पश्चिम एशिया में जारी तनाव ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों को प्रभावित किया है। भारत जैसे देश के लिए यह स्थिति ज्यादा गंभीर है, क्योंकि हमारी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात पर निर्भर है। कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि का सीधा असर पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस, परिवहन, बिजली और उत्पादन लागत पर पड़ता है। जब ईंधन महंगा होता है, तो खेत से मंडी, मंडी से बाजार और बाजार से घर तक हर वस्तु की बुलाई महंगी हो जाती है। यही कारण है कि ईंधन की कीमतों में वृद्धि धीरे-धीरे पूरे बाजार में महंगाई का रूप ले लेती है। मई महीने के शुरुआती दिनों में ही महंगाई के कई संकेत सामने आ गए। कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम में भारी बढ़ोतरी ने होटल, रेस्टोरेंट, छोटे दुकानदारों और खान-पान से जुड़े कारोबारियों की परेशानी बढ़ा दी है। 19 किलो वाले कमर्शियल सिलेंडर की कीमतों में करीब एक हजार रुपये तक का इजाफा छोटी दुकानों और मध्यम कारोबारियों के लिए बड़ा झटका है। इसका सीधा असर तैयार भोजन, मिठाई, चाय-नाश्ता और बाहर खाने की कीमतों पर दिख सकता है। भले ही भरेलू रसोई गैस के दाम फिलहाल स्थिर रखे गए हों, लेकिन कमर्शियल गैस की महंगाई आखिरकार आम ग्राहक तक पहुंचती ही है। दूध की कीमतों में बढ़ोतरी भी आम परिवारों के बजट को प्रभावित करने वाली है। दूध ऐसी वस्तु है, जिसका इस्तेमाल लगभग हर घर में होता है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, चाय से लेकर मिठाई तक, दूध का महत्व रोजमर्रा के जीवन में बहुत अधिक है। अमूल और मदर डेयरी जैसी बड़ी कंपनियों द्वारा प्रति लीटर कीमत में वृद्धि का असर शहरों से लेकर कस्बों तक महसूस किया जाएगा। दूध महंगा होने का मतलब केवल दूध का महंगा होना नहीं है, बल्कि दही, पनीर, मिठाई और अन्य डेयरी उत्पादों की कीमतों में भी वृद्धि की आशंका है। पेट्रोल और डीजल के दाम में वृद्धि सबसे व्यापक असर डालती है। पेट्रोल महंगा होने से निजी वाहन चलाने वालों पर बोझ बढ़ता है, जबकि डीजल महंगा होने से माल बुलाई, बस सेवा, कृषि कार्य और उद्योगों की लागत बढ़ती है।

अमित शाह ने बस्तर में शहीद वीर गुण्डाधुर सेवा डेरा जन सुविधा केन्द्र का किया शुभारंभ

रायपुर। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने आज छत्तीसगढ़ के बस्तर में शहीद वीर गुण्डाधुर सेवा डेरा जन सुविधा केन्द्र का शुभारंभ किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा, केन्द्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन और तपन डेका, निदेशक, आसूचना ब्यूरो सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अपने संबोधन में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि आज एक बहुत ऐतिहासिक दिन है। शहीद वीर गुण्डाधर की यह जन्मभूमि और कर्मभूमि अपने आप में भारत के हर नागरिक के लिए तीर्थ समान है। वर्ष 1910 में हमारे वीर आदिवासी नेता ने भूमकाल विद्रोह के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की शुरूआत की थी और विदेशी शासन के विरुद्ध बस्तर के आदिवासियों की लड़ाई का नेतृत्व शहीद वीर गुण्डाधुर ने किया था। उन्होंने कहा कि आज उन्हीं से प्रेरणा लेकर नेतानार का यह कैंप, जो वर्ष 2013 से सुरक्षा कैंप था, अब सेवा कैंप बनकर आदिवासियों की सेवा करेगा। छत्तीसगढ़ सरकार ने इस सेवा कैंप का नाम भी शहीद वीर गुण्डाधुर के नाम पर रखा है। यह कैंप हमें सदैव स्मरण कराएगा कि एक समय यहां छह पुलिसकर्मियों की निर्मम हत्या की गई थी, यहां के स्कूल, अस्पताल उजाड़ दिए गए थे, राशन पहुंचने नहीं दिया गया, रोजगार और शिक्षा से लोगों को वंचित रखा गया। श्री शाह ने कहा कि आज उसी स्थान पर, जहां हमारे छह जवान शहीद हुए थे, वहां गरीब आदिवासियों की सेवा का एक तीर्थ स्थल बनाने का कार्य प्रारंभ हो रहा है।अमित शाह ने कहा कि जब हमने नक्सलवाद समाप्त करने का संकल्प लिया, उसका उद्देश्य केवल नक्सलियों का खात्मा करना नहीं बल्कि इस क्षेत्र के गरीब आदिवासियों के जीवन में वे सभी सुविधाएं पहुंचाना भी था, जो बड़े-बड़े शहरों में उपलब्ध हैं, जिससे उनके बच्चों का भविष्य भी उज्ज्वल बन सके। उन्होंने कहा कि卐नियद नेल्लानार योजना के माध्यम से छत्तीसगढ़ सरकार हर गांव में सस्ते राशन की दुकान खोल रही है, हर गांव में प्राथमिक विद्यालय स्थापित किए जा रहे हैं और गांवों के बीच में एक समूह क्क्स्ट एवं ष्टस्ष्ट खोले जा रहे हैं। अब यहां हर गरीब के घर तक पीने का पानी पहुंचाने का काम हो रहा है, आधार कार्ड बन रहे हैं, राशन कार्ड बन रहे हैं। हर व्यक्ति को प्रति माह 7 किलो चावल दिया जाता है और 5 लाख रूपए तक का पूरा इलाज मुफ्त में करने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की योजना भी अब यहां तक पहुंच चुकी है।अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने भी आह्वान किया है कि नक्सलवाद समाप्त हो गया है, ऐसा मानकर चैन की नींद नहीं सोना है। नक्सलवाद से हुए नुकसान की भरपाई हम 5 साल के अंदर कर इन सभी गांवों को ऊर्जावान आदिवासी गांवों में बदलेंगे।

केंद्रीय गृहमंत्री शाह ने अमर वाटिका में शहीदों को दी श्रद्धांजलि

रायपुर। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने अपने बस्तर प्रवास के दौरान आज जगदलपुर स्थित अमर वाटिका पहुंचकर माओवाद के विरुद्ध संघर्ष में अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान देने वाले एक हजार से अधिक अमर शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव उपस्थित थे।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि बस्तर की धरती पर शांति, सुरक्षा और विकास स्थापित करने में हमारे जवानों का बलिदान अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा कि देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर जवानों का त्याग कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि केंद्र और राज्य सरकार बस्तर में स्थायी शांति स्थापित करने, विकास को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने और माओवाद के समूल उन्मूलन के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।

इस दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बीजापुर नक्सली हमले में शहीद हुए जवान कालेन्द्र प्रसाद नायक एवं पवन कुमार मंडावी के परिजनों से आत्मीय मुलाकात की। उन्होंने परिवारजनों के बीच बैठकर उनका दुख साझा किया, ढांढस बंधाया तथा सरकार की ओर से हरसंभव सहायता का भरोसा दिलाया। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने सुरक्षाबलों के जवानों से संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया और उनके साहस एवं समर्पण की सराहना की।मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि शहीद जवानों का बलिदान छत्तीसगढ़ कभी नहीं भूलेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार शहीद परिवारों के सम्मान, सुरक्षा और कल्याण के लिए पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि बस्तर अब शांति, विश्वास और विकास की नई दिशा में आगे बढ़ रहा है और इसमें सुरक्षाबलों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री विजय शर्मा, वन एवं पर्यावरण मंत्री केदार कश्यप, जगदलपुर विधायक किरण देव सहित जनप्रतिनिधिगण, वरिष्ठ पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

द्वितीय राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यशाला में डेटा हार्मोनाइजेशन पर हुआ मंथन

रायपुर। आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, छत्तीसगढ़ शासन के तत्वावधान में आज डेटा हार्मोनाइजेशन विषय पर द्वितीय राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य शासकीय आंकड़ों के संकलन, प्रबंधन और उपयोग में समन्वय स्थापित करते हुए उनकी गुणवत्ता, एकरूपता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करना था। आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय के अपर संचालक नारायण बुलीवाल कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि नीति निर्माण, योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और साक्ष्य-आधारित निर्णयों के लिए विभिन्न विभागों के आंकड़ों का मानकीकरण एवं समन्वय अत्यंत आवश्यक है।

कार्यशाला के दौरान कई तकनीकी एवं नीतिगत सत्र आयोजित किए गए। इनमें डेटा हार्मोनाइजेशन की अवधारणा, आधिकारिक सांख्यिकी के संपूर्ण डेटा जीवन चक्र के प्रबंधन हेतु परिचालन दिशानिर्देश (मास्टर टूल किट), यूनिक आइडेंटिफायर्स एवं वर्गीकरण प्रणाली, तथा भारत सरकार के सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी हस्छ्ड्स 2.0 दिशानिर्देशों पर विस्तृत प्रस्तुतियाँ दी गईं। इसके अलावा Statistical Quality Assessment Framework (SQAF) तथा CHiPS के अंतर्गत विकसित डिजिटल द्वार प्लेटफॉर्म पर भी विशेषज्ञों द्वारा जानकारी साझा की गई। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रतिभागियों को डेटा गुणवत्ता मूल्यांकन, मानकीकरण और डिजिटलीकरण की आधुनिक प्रक्रियाओं से अवगत कराया गया।

दोपहर सत्र में प्रतिभागियों के लिए एक इंटरैक्टिव अभ्यास आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न विभागों के बीच डेटा लिंकेज की संभावनाओं पर समूह चर्चा हुई।

जिले में ज्ञान भारतम अभियान अंतर्गत सर्वेक्षण कार्य जारी

रायपुर। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना ज्ञान भारतम अंतर्गत जिले में पारंपरिक भारतीय ज्ञान के संरक्षण एवं डिजिटलीकरण हेतु सर्वेक्षण कार्य निरंतर जारी है। भारत सरकार द्वारा संचालित इस परियोजना का उद्देश्य भारतीय मौलिक एवं परंपरागत ज्ञान को संरक्षित कर उसे वैश्विक स्तर पर शोध एवं ज्ञानार्जन हेतु उपलब्ध कराना है। इसके लिए देशभर में ताड़पत्र एवं प्राचीन पांडुलिपियों के चिन्हांकन एवं सर्वेक्षण का कार्य किया जा रहा है।

कोण्डागांव जिले में इस अभियान का शुभारंभ कलेक्टर श्रीमती नुपूर राशि पन्ना के मार्गदर्शन एवं डिप्टी कलेक्टर श्रीमती रश्मि पोया के निर्देशन में किया गया। प्रारंभिक चरण में विकासखंड कोण्डागांव अंतर्गत ग्राम बड़ेकनेरा के मारीगुड़ा लिमऊगुड़ा पारा निवासी श्री रामूराम यादव के संरक्षण में उपलब्ध 08 ताड़पत्र पांडुलिपियों का चिन्हांकन किया गया।

इसी क्रम में विकासखंड माकड़ी अंतर्गत ग्राम पंचायत अमरावती के चौंकपारा एवं पटेलपारा में संरक्षक श्री हिरामन मौर्य एवं श्री निरंजन मानिकपुरी के संरक्षण में उपलब्ध ताड़पत्र पांडुलिपियों का भी ज्ञान भारतम मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से सर्वेक्षण किया गया।

सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है राज्य सरकारः मंत्री अग्रवाल’

रायपुर। छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। इसी दिशा में पर्यटन, संस्कृति एवं धर्मस्व मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने सरगुजा जिले के उदयपुर विकासखंड के ग्राम फुलचुही एवं डांड़गांव में विभिन्न धार्मिक विकास कार्यों का विधिवत भूमिपूजन कर क्षेत्रवासियों को महत्वपूर्ण सौगात दी।

मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने उदयपुर विकासखंड के ग्राम फुलचुही स्थित पंचमुखी पहाड़ी में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सीढ़ी निर्माण एवं मंदिर भवन पुनर्निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। इसके साथ ही ग्राम डांड़गांव में मंदिर निर्माण कार्य की आधारशिला रखी। इन विकास कार्यों से न केवल श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होंगी, बल्कि क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। मंत्री श्री अग्रवाल ने कहा कि डबल इंजन की सरकार प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक परंपराओं को संरक्षित करने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

उन्होंने कहा कि मंदिर केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं होते, बल्कि वे समाज की आस्था, संस्कृति, सामाजिक समरसता और परंपराओं के जीवंत प्रतीक भी हैं।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.